राम-बन-यात्रा
नाटक

कुम्हैला (ज़िला शाहाबाद) निवासी
बाबू गिरिवरधर वकील समस्तीपूर
द्वारा विरचित ।

PRINTED BY
Rajkishor Varma & Bros.,
AT
The Rajniti Press, Patna City

प्रथमबार १०००] १९१० [मूल्य ।।=)

॥ श्री गणेशायनमः ॥

॥ समर्पण ॥

सवैया ।

निशि बासर हेरत हारेउं राम-कथा-जल-मीन[1] लखाइ न देतू
भव-वारिधि-पार उतारन हेतु जिन्हे हम आजु बनावउं सेतू
हर के हिय मों नित राम बसैं औ बसैं नित राम-हिये बृषकेतू
सिय-पी के जो 'सेवक-स्वामि-सखा[2]' तिनहीं यह अर्पतहौं यहिहेतू

दीन गिरिवरधर

१—राम कथा रूपी जल में मीन रूपी प्रेम रखनेवाला
२—अर्थात् शिवजी

भूमिका।

नाटक वो नाटक खेलने वाली कम्पनियां में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। दोनो की उन्नति वो अवनति साथ साथ होती है। हिन्दी नाटक खेलनेवाली कम्पनियों का अभाव, हिन्दी साहित्य में उत्तम नाटक के अभाव का एक मुख्य कारण है। हिन्दी नाटकों में बहुधा संस्कृत वा अन्य प्रचलित भाषाओं के नाटकों का उल्थाही पाया जाता है। कोई२ कहते हैं कि आज कल का समय कबिता वो नाटक के बनने के लिये उपयोगी नहीं हैं। परन्तु जब हम देखते हैं कि बङ्गला वो अन्य हिन्दुस्तानी भाषाओं में आजही कल सहस्रों नाटक नवीन वो उत्तम बने हैं, वो दिन २ बनतेही जाते हैं तो हिन्दी भाषा में नाटक के अभाव का कोई दूसरा कारण अवश्य है। मेरी बुद्धि में और कारणों के अति-रिक्त हिन्दी थियटर का अभाव भी एक प्रबल कारण है।

पारसी लोग जो हिन्दू सम्बन्धी नाटक खेलते हैं उसकी भाषा प्रायः उर्दू होती है, वो भाव भी प्रायः हिन्दुओं के बिरुद्धही होता है। जैसे इन्द्र सभा में देव का अर्थ राक्षसही समझा गया है, जिस देव का रूप दिव्य होना चाहिये, वह अत्यन्त डराबने काले भूत के रूप में दिखलाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त और भी

नाना कारण हैं जिससे पारसी कम्पनियां हिन्दी थिय-टर का स्थान ग्रहन नही कर सकीं।

हां, आज कल रामलीला मण्डलियों की संख्या दिन २ बढ़ती जाती है। बिहार वो युक्तप्रदेश में बहुत सी मण्डलियां स्थापित हो चुकीं हैं, जो नगर २ घुम कर राम भक्ति की वर्षा कर रही हैं। परंतु इन में भी कुछ तो द्रव्याभाव से वो कुछ सिक्षित जन नहीं रहने के कारण ठीक नाटक रूप में लीला नहीं दिखलाई जाती, वो इधर कोई नाटकाकार पुस्तक रामलीला बिषय पर नहीं रहने के कारण, बहुधा गोस्वामी तुलसी-दासजी के पदों की सहायता ली जाती है। परन्तु गोस्वामीजी की पुस्तक नाटकाकार नहीं होने के कारण योग्य पदों के चुनने में लोगों को बड़ी कठिनाई होती है, वो असिक्षित जनों के हाथ में बहुत से पद भाव विरुद्ध वो कभी हास्य जनक हो जाते हैं. मैं ने कई मण्डलियों में देखा है कि वशिष्ठजी के मुख से यह पद पढ़ाया जाता है:— "सुनहु भरत भावी प्रवल बिलखि कहहिं मुनिनाथ"। स्वयं मुनि के मुख से "बिलखि कहहिं मुनिनाथ" कहलाना नाटक खेलने के समय कैसा जान पड़ता है पाठक गण स्वयं बिचार लेंगे।

इसी कारण मेरे मन में यह बात आई, कि यदि हिन्दी भाषा में कोई पुस्तक नाटकाकार रामलीला बिषय पर होती तो ऐसी त्रुटियां लीला में देखी नही

जातीं। परन्तु यह करै कौन ? उत्तम हिन्दी नाटक के लेखक कहां मिलैं ? पद्य कौन कहै गद्य में भी आजतक मैं ने कभी कुछ नही लिखा " मति अति नीच ऊंच रुचि आछी। चहिये अमिय जग जुरै न छांछी"॥ दिन२ अभिलाषा तो बढती गई पर मैं ने सोंचा कि मैं कवि हूं नही. वो विशेषत: गान बिद्या से बंचित वो भाषा पिङ्गल में मूर्ख होने के कारण ऐसे कठिन काम मे हाथ लगांने को मैं अन्यन्त अयोग्य हूं। अपनी दशा पर ' चहत वारि पर भीति उठावा" पद स्मर्ण आता था। फिर मैंने विचारा कि यदि मैं इस कार्य्य में सफल भि नहोसकूं, तो जो समय इस में व्यतीत होगा व्यर्थ खोना कदापि नही कहा जा सक्ता। क्योंकि इतने समय तक मेरा ध्यान तो अवश्य ससारिक चिन्ता से विहीन, केवल राम-चरित्र वो राम-परिवार-चरित्र ही में लगा रहेगा। इसलिये अपने अयोग्यता पर अधिक ध्यान न दे कर कार्य्यारम्भ कर दिया ।

चूंके इस पुस्तक के समाप्त होने अथवा छपाने योग्य अवस्था में पहुचने कि कोई आशा न थी, इस कारण समाप्त होने के पहले यह पुस्तक किसि को दिखलाई नही गई, वो न किसी मित्र वर्गों से किसि प्रकार की सम्मति ली गई। इस पुस्तक के प्रबन्ध या पद-रचना में जो कुछ भूल है उसका उत्तरदाता मैं हीं हूं। हां, पुस्तक समाप्त होने पर मैं ने इसे बाबू गिरिवर

धारी लाल कमालपुर निवासी, वो बाबू जुगुलप्रसाद सथमलपूर निवासी वो भारतेन्दु के जीवन-चरित्र-रचयिता बाबू शिवनन्दन सहाय अख्तियारपुर निवासी, को दिखलाया वो उनलोगों के उपदेशानुसार जहां तहां पद परिवर्तन किया गया है, जो इस उपकार के लिये कोटि धन्यवाद के भाजन हैं। इसके अतिरिक्त मैं कोटि धन्यबाद देता हूं बाबू ठाकुरदयाल साहेब मुन्सिफ को, जिन्हों ने इस पुस्तक के कई भजनों को प्रेम पूर्व्वक गान कर के मेरे उत्साह को बढाया। बाबू राम-गुलाम लाल (उपनाम रसिक बिहारी) को भी धन्यबाद मैं इसलिये देता हूं कि उन्हों ने कृपा करके भजनों के उपर राग रागिनियां लिख दी है। इस्के शुद्धाशुद्ध का ज्ञान मुझे नही है। संगीत शास्त्र में निपुण पाठकगण इस बिषय के भूल को कृपया स्वयं सुधारलेंगे।

इसी लगाव में यह कहना अनुचित नही जान पड़ता, कि इस पुस्तक के रचना में यदि मुझे किसी से सच्ची सहायता मिली है तो केवल अपनी स्त्री से मिली है। इस में चतुर्थांश पद उनकी रचना की हुई थोड़ा बहुत परिवर्तन के अनन्तर जैसी की तैसी रखी हुई है। वल्के पद-रचना आरम्भ करने का यश उन्ही को प्राप्त है। कौशल्य विलाप का पद "नाथ मोहि त्यागि चले सुर धाम" रचना कर के कार्य्यारम्भ उन्ही ने किया था। और यदि वह समय समय पर मेरे उत्साह

वो श्रद्धा को बढ़ाती नही आतीं, तो इस पुस्तक का समाप्त होना कदापि सम्भव नहीं था ।

कथा का प्रबन्ध किसी एक पुस्तक से नही लिया गया है। कहीं बाल्मीकि,कहीं अध्यात्म, वो कहीं गोस्वामिजी के, रामायण से सहायता ली गई है। कहीं२ स्वछन्द रुचि के अनुसार भी परिवर्तन किया गया है; और यद्यपि शोकान्त नाटक की चाल भाषा नाटकों में नही है, परन्तु मेरे विचार में रामचरित्र के इस भागका नाटक शोकान्त ही होना समयानुकूल जान पड़ा। पद रचना में व्रजभाषा वो विहार के बोल चाल की भाषा मिश्रित है । यद्यपि मैं जानताहूं कि खड़ी बोली के प्रेमी आधुनिक भाषा के सुलेखक गण इसे पसन्द नहीं करेंगें, परन्तु मेरे तुच्छ बुद्धि में यही मिश्रित भाषा सरल वो मीठी जान पड़ी; वो मेरी रुचि इसी ओर झुकी । चूंकि प्रचलित रामलीला मण्डलियों में पद्य ही की चाल अधिक है, इस कारण इस पुस्तक में भी अधिकतर पद्य ही रखा गया है। यथार्थ में यह नाटक नही, वल्के गीतिरूपक हुआ । इन सब ढिठाइयों को पाठक गण क्षमा करेंगें ।

रामचरित्र के इस भाग के चुनने का दो कारण है । एक तो यह कि बाल कांड आदि की पदरचना कहीं २ हुई है, परन्तु मैं ने इस भाग की पदरचना नाटक रूप में नहीं देखा । दूसरा यह कि इस भाग की बातें अत्यन्त हृदयग्राहिनी मर्मस्पर्शी और अनेक प्रकार की शिक्षा देनेवाली हैं,ऐसी पिताभक्ति, पुत्रप्रेम, स्त्रीहठ, भ्रातृभाव, पत्नीप्रेम,

पतिभक्ति इत्यादि एक स्थान में एकत्र कहां मिलेगी ? प्रजा का राजा के सुख में इस प्रकार आनन्द वो राजा के दुख में इस प्रकार विह्वल होना पुराने हिन्दुओं के राजभक्ति का कैसा उत्तम उदाहरण जो सर्वथा अनुकरनीय है ।

पुस्तक तैयार हो जाने पर कैएक मित्रों ने इसे छपवाने के लिये मुझसे कहा; परन्तु मेरा साहस नहीं पड़ता था। फिर मैं ने बिचारा कि यदि यह पुस्तक छपने पर किसी सुलेखक वा सुकवि के हाथ पड़े. वो राम-यश-वर्णन ऐसे महान बिषय पर यह काव्य-रस-हीन वो सब प्रकार अयोग्य रचना देख, उनके हृदय में घृणा होकर, योग्य रचना करने का उत्साह उत्पन्न हो, तो मेरा परिश्रम सफल हो जायगा ।

पाठक गणों से मेरी प्रार्थना इतनीही है कि इस पुस्तक को एकवार आद्योपान्त पढ़ जायगें। पद-रचना के त्रुटियों पर अधिक ध्यान नहीं देंगे, क्योंकि मैं तो "कबि न होंउ नहि चतुर कहाऊं । मति अनुरूप राम गुण गाऊं ॥"। इस पुस्तक में और कुछ प्रशंसनीय न हो पर राम यश तो अवश्य है। यदि रामलीला मण्डलियां इसके किसी एक पद को भी, राम नाम के नाते अपने नाटकपात्रों को कंठस्थ कराकर, दर्शकों को सप्रम सुनावेंगे, तो मेरा परिश्रम सफल होगा ।

समस्तीपूर-
ता: १-४-०९

गिरिवरधर.

सूचीपत्र

॥ श्री ॥



॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ राम वन यात्रा नाटक ॥

प्रथम अंक

प्रथम दृश्य—इन्द्र भवन

(इन्द्र सिंहासन पर बैठे बिचार कर रहे हैं)

सवैया

इन्द्र—

१ हाय समै विपरीत भयो सुर-धर्म-बिभौ-मरजाद सिरानी
रावण-तेज बढ्यो जग मो घन मालनहीं तै भरावत पानी
देव सबै गृह-काज करैं कर जोरे रहैं यहि के रजधानी
योगरु यज्ञ बिध्वंस करै मुनि साधुन सो कर ले अभिमानी
२ देवन बान्दि कियो अरु पुष्पक लंक कुबेर ते छीनि लियोहै
कञ्चन कोट बनाइ बस्यो बहु नारिन धर्म बिनाश कियोहै
दानव देव नरादिक मों अस बीर न जाहि न जीति लियोहै

रावण दर्प कहां लो कहौं तिहुं लोकहिं नाकन नाक कियोहै
३ रावण ते सब लोग दुखी सुरनायक हो पुनि मैं हुं डराऊं
ब्राह्मण साधु मुनी सुर गो निज धर्मरु राजहिं कैसे बचाऊं
भोरहिंराम बनें युवराज दशानन हा केहि भांति नसाऊं
काह उपाय करों बिधना जेहिते बन रामहिं प्रात पठाऊं
४ जग तारन ओर दशानन नाशन हेतु रमापति जन्म लियो
जग भोगविलासहिं जाइ फंस्यो युवराज बने कर साजकियो
कछु बात सुहात न चैन मिले अति व्याकुलहो घबड़ातहियो
विधि काह करौं कछुसूझत ना केहि भांति करौं हमथीरजियो

अच्छा अब एक बार बुद्धिमती सरस्वती जी का ध्यान तो करूं -

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य—सरस्वती भवन

(सरस्वती हाथ में वीणा लिये कई सखियों के साथ बैठी हैं)

सरस्वती सखी क्या सुनना चाहती हो ?

सखी- कृपा कर संसारी जीवों के उपकारार्थ कोई भजन सुनाइये ।

सरस्वती बहुत अच्छा सुनो ।

भजन बिहाग

सकल नर बूड़त भव-सरि-धार ॥ सकल नर ॥
केतहु साज समाज बटोरहु, कोउ न उबारनिहार ॥ टेक ॥
जन्म जन्म के पाप पुंज मिलि, पीठ लदेउ है भार ।
दुर्बल गात न बोझ सकै सहि, जाना है भव-सरि-पार ॥
कल बल छल करि भांति अनेकन, प्राण बचेउ दिन चार ।
तैरत पौरुष थाकि गयो जब, आई परेउ मझधार ॥

कहं गये मातु पिता युवती सुत, और सकल परिवार।
कोउ न काम आवत याहि अवसर, देखहु मूढ़ विचार॥
जो कछु पुन्य कियो नर जग मों, सब मिलि करत गोहार।
पुन्य नाव सहि सक न भार पुनि, केवट है मतवार॥
या दिन को कछु सोंच कियो नहिं, भूलि जगत व्यवहार।
यहि अवसर सब सुध बुध भूलेउ, कोउ न बुझावनिहार॥
चेतु चेतु अबहूं ते जड़ मति, शारद कहत पुकार।
राम भजन बिनु केतहु चाहहु, नाहिं है बेड़ा पार॥

सखी- अहा कैसाही मधुर आप का स्वर वो इस बीणा का शब्द है, आप ने संसारी जीवों का ठीक चित्र खींचा है बिषयों में वे ऐसेही निरत हैं कृपा कर एक और भजन इसी बिषय पर सुनाइये।

सरस्वती- धन्य हो सखी ऐसे निरस बिषयों में भी तुम्हारा इतना प्रेम है, अच्छा सुनो।

भजन बिहाग

जगत कर है झूठो व्यवहार।

स्वप्न गगन-भवन मृग-तृष्णा, इव लखात संसार॥टेक॥
इन्द्रि बुद्धि अरु मन ते कल्पित, देशरु काल बिचार।
भिन्न व्यक्ति को भिन्न रूप में, सूझत बिबिध प्रकार॥
प्रिय परिजनन समागम यामिनि, सुख मय पल सम जान।
बिरहिन रैन बर्ष सम बीते, कौन यथारथ ज्ञान॥
कोउ ढिग दूर दूरहिं ढिग कोऊ, देखत नाना भांत।
नयन यंत्र कर खेल सकल यह, सत्य न जानो जात॥
मातु पिता सुत नारि पड़ोसिन, सेवक अरु परिवार।

इनहिं मोह बस बूझत रक्षक भूलि जगत कर्तार ॥
काल भयंकर आइ गयो जब, मूढ़ चहैं निस्तार ।
घेरि खड़े सब प्रिय परिजन हैं, कोउ न बचावनि हार ॥
अबहूं चेत करहु नर इन महं, कोउ हित नाहिं तुह्मार ।
मानत तोहि सकल स्वारथ बस, देखहु नैन पसार ॥
जो प्रिय तुम कहं औरहिं रिपु सम, औरन रिपु प्रिय तोर ।
भ्रम बस प्रिय रिपु सूझत है जस, मकर चान्दनी भोर ॥
माया नटी नचावत सबहीं, छानत झूठ बजार ।
बिनु माया पति मिटै न भव-भ्रम, करहु कोटि उपचार ॥
जगत कर है झूठो ब्यवहार ॥

(नेपथ्य में) ॥ सवैया ॥

तोहि शारद शीश नवावतहौं जननी सब देवनकी सुधि लेहू ।
अबतो सहिजातनशोक व्यथा निजबालकपै नमिसारहुनेहू ॥
सुर साधु सबै हहकार करैं अब आइ के संकट ताप हरहू ।
आर्तदीनदुखीसबब्याकुलहैं जननीनिज रूप लखाकिन देहू ॥

सरस्वती:-अहा, यह किसका आर्त्तनाद सुनाई दे रहा है ?

सखी:-हाय, इस आनन्द के समय में यह किसने विघ्न डाला ?

सरस्वती--(कुछ ठहर कर और ध्यान देकर) यें यह तो सुर-राज का शब्द जान पड़ता है चलूं देखूं तो क्या बात है ।

(उदग्र होकर सरस्वती जाती हैं)

(पटाक्षेप)

तृतीय दृश्य--इन्द्र भवन ।

(इन्द्र ध्यानावस्थित प्रार्थना कर रहे हैं)

॥ सवैया ॥

तोहि शारद शीसनवावत हौं जननी सब देवन की सुधि लेहू ।
अबतो सहिजात नशोकव्यथानिजबालकपै नबिसारहु नेहू ॥
सुर साधु सबै हहकार करें अब आइ के संकट ताप हरेहू ।
अति दीनदुखी सबव्याकुलहैंजननी निजरूपलखाकिनदेहू ॥

(सरस्वती आता हैं)

इन्द्र (उठकर प्रणाम करते हैं)

॥ दोहा ॥

माता तव पद कमल को, प्रणवौं बारम्बार ।
जा चरणन के दरश ते, सब हित होय हमार ॥

सरस्वती—महाराज की जय हो ।

॥ सोरठा ॥

सुनु सुरेश तोहि आजु, काज कौन प्रगटेउ कठिन ।
जेहि बिनु होत अकाजु, कहहु वेगि समुझाइ किन ॥

इन्द्र—क्या कहूं माता आप को बिना कारण मैंने कलेश नहीं दिया है

॥ सवैया ॥

१ घोर उपद्रव होय मचै चहुं ओर लखो न अनेक प्रकारा ।
निश्चर-ताप जरें सुर सज्जन देव-प्रताप कहांधौं सिधारा ॥
कुंठित वज्र भयो मम हा इन दुष्टन ते एरावत हारा ।
जीति-हमैंघननाद भयो अब इन्द्रजिता धिक हाय हमारा ॥
२ मातु सुनो हमरी बिनती अरु दूरि करौ दुख संकट त्रासा ।
रावण नाश बिना सुर सन्तन नैनन नीन्द न प्राणकीआसा ॥

राम विना नहिं काम सरैवानिभूप करैं यदि भोग विलासा ।
मातु उपाय रचो अस आजु तजैं प्रभु राज करैं बनवासा ॥

सरस्वती (दर्शकों की ओर मुंह कर) हा अब संसारी जीवों को कौन दोष दे स्वार्थ ने देवराज को भी बश कर लिया ।

भजन—खमाच—तेताला ।

भुलहु जनि स्वारथ बश जग जानो ।
पशु नर मुनि सुर सुरपति हूं को कबहु न हित करि मानो ॥
टेक ॥ पशु पंछी तुम्हरे संग खेलत, जब लगि नेह तिहारो ।
नेह घटत भोजन नहिं पावत, छनहिं में होत किनारो ॥
जब लगि धन उपराजहु सहि दुख, घेरत कुल परिवारा ।
धन बिनु सुत तियहू मुख मोरत , मूढ़ न करत विचारो ॥
करि आदर सतकार मुनिन ऋषि, लेहु सकल बरदानो ।
श्राप देत विष सम कठोर बनि, तनिक होत अपमानो ॥
देवी देव जपत पूजत नित, मन बांछित फल पावो ।
होइ निरादर क्रोध करत जब, धरहु ते सकल गंवावो ॥
सिव नारद हरिचंद पुन्य लखि, सुरपति डाह कियो ।
राम तिलक जग आनन्द दायक, सो सुनि जरत हियो ॥
पुन्यहि पाप दबाइ दियो जग, राज अखण्ड जमायो ।
सब अवगुण इक संग समति करि, सद्गुण तेज घटायो ॥

(पुनः इंद्र प्रति क्रुद्ध भाव से)

हे देवराज ।

॥ सवैया ॥

ऐसो कठोर कथा तुमभाषहु लाज नहीं तनिको हिय आवत ।
आपन स्वारथ लागि भला दुख मोचन को दुखदेन बतावत ॥
क्रूर कुचालि महा कपटी प्रभु के अभिषेक न हर्ष मनावत ।
राम सिया कर नाम जपो सुख धाम सदा सब काम बनावत ॥

इन्द्र—(दर्शकों के ओर मुंह करके) धन्य हैं ईश्वर जिन की माया ने बुद्धिमती सरस्वती को भी नहीं छोड़ा ।

भजन—सोहनी ।

सियावर कौतुक अगम तुम्हार ।
जो लखि भूलेउ शेष शारदा, वेद न पावत पार ॥
बुद्धिधाम बल सींव दयानिधि, माया गुण गो पार ।
पुन्य नीति अरु प्रीति नेंव दृढ़, बांधि रचेउ संसार ॥
पुन्य अधिक गुण सत्य अधिक जग, या मों नहिं सन्देह ।
पाप झूंठ यदि होय अधिक जग, कहहु बसे को गेह ॥
मातु पिता युवती सुत पति गुरु, प्रेम भक्ति विश्वास ।
तुलहु ताहि जग के अवगुण संग, लखु जिमि उपल कपास ॥
भिन्न काल महं प्रतिजन भावहिं, जो कोउ करै विचार ।
अवशि पाव सद्भाव अधिक नित, दुर्जन हूं व्यवहार ॥
सुख मय काल न गरुअ क्लेश सम, बातहिं मों बिति जात ।
विपद काल नहिं चैन देत चित, पलकहुं वर्ष लखात ॥
पुन्य कोलाहल हीन शान्ति प्रद, कोऊ ध्यान न देत ।
तनिक पाप जग नियम भंग करि, उकल विकल करि देत ॥

याते भ्रम बश पुन्य न्यून अरु, पातक अधिक बुझात ।
त्यागि मोह भ्रम यदि बिचार करु, सांच नहीं यह बात ॥
यदपि दोष गुण मिश्रित जग मों, अधिक गुणहिं हिय धार ।
नाहिं त नष्ट होय इक छिन मों, सकल शृष्टि कर्तार ॥

(पुनः सरस्वती पूति)

सवैया ।

१ मातु क्षमा करहू मम भूल सही नहिं जात कठोर ये बानी ।
पाप लगे अस बात कहे छनहीं महं हो यश-कीरति-हानी ॥
दोष लगावति हौ जग को कस रामहिं को जग नायक जानी ।
राम के आयसु होय जो ना नहिं डोलत पात समीररु पानी ॥
२ तोहि योग्यनहींजननीअसबातलखोजगकोदोउनैनउघारी ।
यदि स्वारथ ही पर ध्यान रहै कोउ पूछ न पूत पिता महतारी ॥
नरछांड़ि लखो पशुपंछिनकोबिनुलाभउन्हें निजसंततिप्यारी ।
लखुपरडुककोककपोतनजोड़नमों कसप्रीति कहोनबिचारी॥
हमस्वारथलागिनतोहिकहौं सुरआरतदेखि हियाफटजाता ।
नहिं चैन मिलै कोउको जग मों रजनीचर भूप करै उतपाता ॥
निगमागम मारगलुप्त भयो युग त्रेतहिं मों कलिकाल लखाता ।
जननी अब बेगि बताउ उपाय नहीं जगके दुख आजुसहाता॥

सरस्वती—

भजन—कलिंगड़ा ।

सुनिये राजा जिय मानिये नहिं ऊना ।
जो कछु कहेउं तुमहिं जांचन हित, मन कछु और गुनोना ॥

क्षमा करहु सुरराज आज हिय, मम अपराध धरो ना।
भाव मोर जिय बूझि समुझि तुम, मो पर क्रोध करो ना॥

छन्द।

सुरनाह बहुरि विचारि सब तव बात अब हम मानिहौं।
दुखसोंच तजु तव काज बिनुकिये सुफलजन्म न जानिहौं॥
तव काज पर-हित-हेतु जानि सदा हिये हम धारिहौं।
यहि काज लगि मम प्राण अर्पण होउ तदपि न हारिहौं॥

हे सुरनाथ जी! आप अब निश्चिन्त रहिये, मैं अभी उद्योग में जाती हूं आप देखते रहिये, मंथरा के जिह्वा पर बैठ मैं कैसा प्रबन्ध रचती हूं।

(जवनिका पतन)

द्वितीय अंक।

प्रथम दृश्य—अयोध्यापुरी—हाट।

(नगरोत्सव—जहां तहां गाना होरहा है)

पुरवासिनी

ठुमरी धुन थियेटर।

१ सुनिआयउं आजु अरी सजनीबनिहैं कल्ह भूप सियावररी।
ध्वज तोरन बन्दनवार सजो सजु मंगल साज घरे घर री॥
दिन सों निशि ज्योति करो सखियां दियरा चहुंओर बराकररी।
परिपूरण प्रेम भरे हिय मों मिलि पूजहु गौरि उमाबररी॥
२ सखिदेखहु ना कटिमों पटुका शिरमों बहु भांतिन की पगरी।
हियमों अतिहीं उत्साह भरे उमगे नर साजत हैं नगरी॥

चलु मंगल गानकरैं मिलिके घरहीं घरमों सखियां सगरी ।
नृपद्वार चलो दधि अच्छत ले कर कञ्चनथार शिरे गगरी ॥

ठुमरी—हमीर ।

३ दिन यामिनि ना मोहि मिलत चैन ।
प्रति रैन नांहि सखि करउं शयन ॥ टेक ॥ जब सो हम सूनेउं तिलक कान, जिय तड़फड़ात अकुलात नयन ॥ कब होय भोर निरखौं किशोर, जेहि बदन देखि ललचात मयन । रति होति वारि जिन्ह सिय निहारि, लखिहौं कुमारि सोइ शील अयन ॥

रेखता—ताल दादरा ।

४ शङ्कर शिवा पद कंज मों बिनती करूं कर जोर ।
प्रभु दीनदानी तूं अहौ अभिलाष पुरवहु मोर ॥
कञ्चन सिंहासन में जड़े मणि मोतियां कड़ोर ।
बैठें सिया दिशि बाम, दहिने राम, होते भोर ॥
हम सब सखी मिलजुल करैं दर्शन बहोर बहोर ।
नयना जुड़ावैं देखि सीता सांवरो किशोर ॥

दादरा ।

५ नर सोहे न लोगो बिना नारी ॥ टेक ॥
जग की रचना महं शारदजी. नहीं ब्रह्मा ते होवैं कभू न्यारी ॥
पयसागर मों हरि बास करैं, पद बैठी दबावैं रमा प्यारी ।
विहरैं नित सङ्ग लिये तिय को, अर्द्धंगी बनाये जटाधारी ॥

अनुसुयाजी के संग कानन मों, तप अत्री कियो है महाभारी।
मन मोहनि मूरति राम बनैं, दिशि वामे विराजैं सिया प्यारी॥

खेमटा—दादरा।

६ सखि यामिनि वितत नाहिं गरुअ भई॥ टेक॥
जियकलनापड़त नहिचैन लहत, तनकीमनकी सुधि बिसरिगई
मोहि सङ्ग गोहार करो रबि सों, सब कञ्ज कली भंवरा चकई।
चलि आउ सूर्य्य निशि नाश करौ, निरखौं री सियाबर रूप नई

जंगला (पांच सात पुरवासी जन मिल कर गाते हैं)

भाग मेरा उदय अब हुआ है। भाई मोरे तिलक राम का है॥टेक।
१ अति बूढ़े हुये मेरेराजा। उनसे चलता नहीं राज-काजा॥
यहि कारण ते ऐसा किया है। भाई मोरे तिलक राम का है॥
२ पखवारों मे होती तैयारी। नर नारिन ने सुधबुध बिसारी॥
आज आनँद में फूली प्रजाहै। भाई मोरे तिलक राम का है॥
३ तप-साधन किये जो हैं तन मे। देव देविन जो पूजे हैं मनमे॥
आज सब का यही फल मिला है। भाई मोरे तिलक राम का है॥
४ आवो२ सभी मिल के गावें। गुण उनका सुनें वो सुनावें॥
पुन्य आके सभी का जुटा है। भाई मोरे तिलक राम का है॥
५ रात काटैं इसी भांति से जी। नहिं निद्रा कभी आने दें जी॥
यह औसर अनूपम मिलाहै। भाई मोरे तिलक राम का है॥

भजन—सोहनी।

सकल मिलि गावहु रे गुण राम।
चित करि थीर दमन करि इन्द्रिन्ह, होइ सदा निष्काम॥टेक॥

सिन्धु त्यागि अवतरेउ भूमि पर, प्रगटेउ दशरथ-धाम ।
दर्शन लगि सुर नर मुनि धाए, पाए निज मनोकाम ॥
अमित निशाचर सदल सपरिजन, कीन्ह कठिन संग्राम ।
सबहिं नाशि, मख राखि मुनी को, दीन्ह अमित विश्राम ॥
पद-रज परसि अहिल्या तरि गई, पहुची पुनि पिय-धाम ।
मिथिलापुरवासी सब मोहेउ, निरखत तनु घनश्याम ॥
शिव-धनु भंजि दलेउ भृगुपति-मद, व्याहेउ सीय ललाम ।
सोई होइहिं काल्ह भूप सखा हो, सब विधि शुभ परिणाम ॥
वर्णत बनै न मों मन जो जो, कीन्ह ये अद्भुत काम ।
अस स्वामी जेहि मिलै सखा हो, का करिहैं विधि बाम ॥
धरि राखहु हिय सुन्दर सांवरि, सूरति आठो याम ।
तजि संसारिक विषय बासना, जपहु निरन्तर नाम ॥

(मंथरा आती है)

मंथरा -

खमाच—दादरा ।

काहे रे बजत आजु अवध बधैया ॥ टेक ॥
नौवत भरत ध्वजा फहराए, बाजत भेरी मधुर शहनैया ॥
हाथ मृदंग सितार पखावज, गान करत अति निपुण गवैया ।
नाचत झूमत ताल बजावत, रंग मचावत लोग लुगैया ॥
हाट संवारत बाट संवारत, केसर चन्दन दे छिड़कैया ।
सानंद उमगि उमगि नर नारिन, काकर हैं सब लेत बलैया ॥

एक पुरवासी अरी इधर आ, मैं बताऊं

सवैया ।

तुम जानत नाहिं अरी कुवरी कल्ह रामहिं भूपति देइहिं राजू
जा सुनि के सब राजप्रजा गण साजत आनँद मंगल साजू
सो सुख मों उनमत्त बनी नरनारिन छाड़ि दियो गृहकाजू
जाचक जाति अजाचक भे नेवछावर प्राण करैं सब आजू

मंथरा—अरे तुम सब तो निराले ढंग की प्रजा जान पड़तो हो?

सवैया ।

भूपरु देश अनेक अहैं कतहुं अस नाहिं प्रजा बउराई
योग्य अयोग्य बिचार नहीं नहिं सोच मकौ निज हानि भलाई
राज के काज नहीं चलिहैं अबहीं अति बालक हैं रघुराई
रामहिं राज चलावन की सुभिहैं कहं नीति कहां चतुराई

२ रा पु:—अरी बाहरी कुवरी, तुम आज तक श्रीरामचन्द्र को निरे बालकही समझती हो? क्या उनके गुणों को तुमने कभी नहीं सुना? राजा के योग्य भला कौन सा गुण उनमें नही हैं?

सवैया ।

प्राणहु ते प्रिय हैं सब लोगन न्यायी बली औ सतोव्रत धारी
कोमलचित दयामय कोविद ब्राह्मण धर्म्म करैं रखवारी
नील सरोरुह से तन की छबि कोटिन्ह काम लजावनिहारी
ऐसोभूआल मिलैं जिनके उमगैं नहिं क्यों अरि नारि गंवारी?

मंथरा—जावो जावो (हाथ चमका कर), यह सब गुण एक उन्ही में है या और भाइयों में भी है?

(कई एक पुरवासी मंथरा को आघेरते हैं वो उसके ओर हाथ देखलार कर गाते हैं)

कंहरवा।

१–अजब तमाशा लाई कुबरी, अजब तमाशा लाई ॥ टेक ॥
गाल बजावति बात बनावति, कर नैना चमकाई।
रंग रंग के दृश्य दिखावति, सीख कहां ते आई ॥ कुबरी० ॥
२–भांति २ के साज सज्यो है, भूषण बसन बनाई।
नगर निवासिन्ह मोहन चाहति, छनहीं छन मुसकाई॥कुबरी०
३–सब शृंगार किये तुम चमकति, हौ चपला की नाई।
पेट धसे अरु पीठ निकाले, अद्भुत रुप लखाई ॥ कुबरी० ॥
४–तोर मनोहर रुप विलोकत, सब के मन ललचाई।
शची रमा रति गौरि शारदा, सबहीं दीन्ह लजाई ॥ कुबरी० ॥
५–केकय नृप भल कीन्ह नहीं जो, तोहि अकेल पठाई।
भागि छिपावहु गुप्त कोन महं, अपनी सुन्दर ताई।कुबरी०।

मंथरा अरे बाबा रे बाबा, अभी तो राम गद्दी पर बैठे भी नहीं इस पर हमारी यह दुर्दशा ? पीछे तो न जाने क्या गति होगी अच्छा इसका फल पावोगे।

(मंथरा झुझलाती हुई जाती है)

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य—कैकेयी भवन

(कैकेयी आसन पर बैठी है- मंथरा आंसूपोछती आती है

कैकेयी–

ठुमरी—पीलू।

सखीरी, काहे बेहाल भई ॥ टेक ॥
कँपत शरीर श्रवत जल नैनन्हि, मुख छबि छीजि गई।

हिय तव धड़कत रद-पट फड़कत, सांस उसास लई ॥
को तोहि मारेउ को तोहि डाटेउ, को तोहि गारी दई ।
की कछु बिपति श्रवण सुनि आयउ, दुखप्रद शोकमई ॥
राम लषण सिय भूप कुशल कहु, भरत शत्रु बिजई ।
नैहर सासुर क्षेम अहे ? कहु, री कस बात नई ॥
अतिशय व्याकुल तोर दशा लखि, हा हम सूखि गई ।
भांति अनेकन भ्रम उपजत मन, कहु किन काह भई ॥

मथरा—

सवैया ।

१ ना कोउ मारेउ ना कोउ डाटेउ ना कोउ गारी दई हमहीं है
मंगल है तव नैहर सासुर तोहि तजी सब आनँदही है
दम्पति मों अस जाल पखंड हहा करतार नहीं कतहीं है
रानि सभी शिर की मणि हैं इक तू नृप के पद की पनही है
२ भोग विलासहिं भूलि रही अपने हित को तुम ध्यान न देहू
जानि पिया अपने बश मों सुखनन्दि सदा दिन रैनहिं लेहू
सूध स्वभाविक हौ तुम तो नृप-बातन पै परतीति करेहू
औसर पाइ छली नरनायक चाहत नासन को तव गेहू

कैकेयी—अरी यह क्या बोल गई कुछ समझ में नहीं आया, कुछ कहो तो सही क्या हुआ है ।

मंथरा—

सवैया ।

बात यथारथ तोहि कहौं सुनि जाहि बहै मम नैनन्हि बारी

बालपने सन हूँ तिहरे सँग प्राणहुं ते अधिका तुम प्यारी
आजु गई नगरी घुमने तहँ देखेउँ रानि कोलाहल भारी
रामहिं के अभिषेक-कथा सुनि के हिय मों मम लागि दंवारी

कैकेयी--

सवैया

नाहक शोक दियो हमहीं तुम मङ्गल काल अमङ्गल भाखी
ना बिपदा कछु या मों अहै हुलस्यो हिय मोर सदाशिव साखी
लेहु निछावर मोतिन म: न अरी प्रिय राम सिया उर राखी
शोक दुराइ मनाउ उमावर राम-सुराज लखौं निज आंखी

कवित्त

नैनन के तारे दुलारे मोरे राम अहैं प्राण के समान मोहि मानैं रघुरावरी। ताके अभिषेक सुनि तोहि हिय पीर होय! ऐसो अयोग्य भाव चित्त ते दुरावरी ॥ सुन्दरी सहेलियों को धाइ के बुलाइ लाउ राम-अभिषेक-हित मङ्गल गवावरी। प्राणपति नीति राखि रामहीं को राज देत ताहि के बिरुद्ध बात मोहि ना सुनावरी ॥

मथरा--

सवैया

१अहो ज्ञान निधान तूं ध्यान धरो अपनो अब काज संवारन को
सपने सुख ना मिलिहैं तोहि राम जो पाइहिं राज-सिहासन को
तुम तो सवती पर प्रेम करो नहि चीन्हतिहो सवतीपन को
सवती सब के मति एक तोही तव पूतहीं काढ़ि दिहैं बन को

२ सांचि कहौं तुम सों मम स्वामिनि रामहिं को अपना समुझोना
राम करैं तिहरी अनुशासन भोरहुं सो अस आस करो ना
राघव की चिकनी बतिया सुनि के मुरखा अबला सी बनो ना
सुन्दर भोजन त्यागि सखी विष पान करी निज हाथ मरो ना

ठुमरी—देस

हमारी प्यारी बात सुनो चित धारो ।
भल अनभल हा सोंचत ना कछु, ना परिणाम बिचारो ।टेक।
तुम अति प्रेम करहु सवतिन्ह पर, ना हिय कपट तिहारो ।
जानत ना तुम दूध पिलावति, हौ नितहीं अहि कारो ॥
राम-मातु मिलि पूत पतिहिं सों, रचत प्रपंच अपारो ।
तोर सुहाग-कृषी बढ़ती लखि, डारत बून्द तुषारो ॥
तजि सुख-नीन्द अजहुँ दृग खोलहु देखहु बिपद पहारो ।
का बनिहैं पछताइ सखी जब, लूटि लिहैं बटवारो ॥

कैकेयी-- (क्रुद्ध भावसे)

सवैया ।

१ खा मम नाज भई सिरताज अरे हतभागिनि लाज न तोही
आपुस में मत फूट करावन हेतु सिखाव कुचाल तूं मोही
जो रसना सन लाइ लगावति सो रसना दश खंड न होहीं
इन्द्र के बज्र गिरे तोहि ऊपर बेगि हटो मम नैनन सोंहीं
२ रे कुबरी निज स्वामिनि-द्रोहिनि रे घरघालिनि नारि कुचाली

काम करी अरि काक समान बखानत आपुहिं राजमराली
रामहिं द्रोही बनावति है मोहि जानति है मुरखा मतवाली
अङ्ग तेरो सब भङ्ग कराइ अभी निज राज सो देंउ निकाली

(मंथरा कुछ डर कर पीछे हट जाती है सिसकती हुई आंसू पोछती है)

कैकेयी–(कुछ ठहर कर) अरी सुन मैंने तुझे केवल सिक्षा दी है. मैं अप्रसन्न नहीं हूं. आश्चर्य्य है कि रामचन्द्र ऐसे बालक के विषय में तुम को ऐसा भाव उत्पन्न हो ।

सवैया ।

सुनु राम तो साधु शिरोमणि हैं उनहीं कस दोष लगावति है
सियराम सदा मम प्राण-अधार बृथा कस बात बनावति है
कोशिला अति सूध स्वभाव कीहै बिनु कारण काहे सतावति है
प्रिय हैं सवती सुत मोही सबै केहि कारण गाल बजावति है

मंथरा–

सवैया ।

बुद्धि तुह्मारी विचित्र अहै जो भलाइ करे उलटो दुख देहू
झूठ प्रपंच बनाइ कहै तेहि मित्र सदा हितकारी बुझेहू
मातु पिता हमारे सब तूं चाहे छाड़हु या रखु मों पर नेहू
बारहिं बार तोही समुझावति काह करौं कछु ध्यान न देहू

कवित्त ।

चेरी तो जातिहीं की नीच वो कुचालि अहैं उत्तम उदार बुद्धिमानी कहां पावैंगी । जहां लौं विचार बुद्धि मेरो मन

आहि सखी तहां लौं बुझाइ तोहि सोवत जगावैंगी ॥ याही हेतु नैहर सो आई संग लागी तेरो बिपति बिलोकि टेरि टेरि कै सुनावैंगी। रीझहु वा खीझहु तूं वाको ना सोंच मोहि तेरी भलाई हित तोहि समुझावैंगी ॥

सवैया।

सखि भूलिगई दिति औ विनता आहि-मातुकथा ध्रुव-मातुकहानी
बृषभानुदुलारीकथा न सुनी तुलसीअरु गंगहि कीन्ह जोहानी
सत सौतिन हाळ तुही मोहि सो बहु बार कही बहु भांतिबखानी
उलटो अब बूझहु जान पड़े कोउ फेरि दियो तुह्मरी मति रानी

कवित्त।

जौं पै नाहि होत कुटिलाई कछु या में सखी काहे अभिषेक होत तोहि सों छिपाइ के। राम, राम-मातु अरु राजा तो तोहि प्रिय काहे ना कीन्ह काज तोहि को सुनाइ के॥ कौन अपराध कीन्ह रानी तुह्मार सुत राम-अभिषेक जाहि अनत पठइ कें। जागु जागु प्यारी ना तो सारा काळ बीत जात काह तूं करोगी पुनि पाछे पछताइ के ॥

कैकेयी—

सवैया।

सखीरी मन मोर फिरै डग खात बुझात नही कछु बात यथारथ
कबहूं हिय मों परतीति पड़े कबहूं तव बात जनात अकारथ

कस मानउंगी अस बात सही नित भूप चलैं मग मों परमारथ
सिय राम सदा मोहि प्रेम करैं विश्वास नहीं करिहैं अस स्वारथ

मंथरा-

सवैया ।

१ कस भोरी भई कछु बूझत ना निज बैरिनि सौतिन की करनी
अभिमान अकाश खिले जिनके हुलसे पद नाहिं पड़े धरनी
विधि दाहिन आजु भये कोशिल्ला जेहि देखत होत हिये जरनी
तव पूत-विभौ शशि अस्त भयो उनके सुत-भाग उगे तरनी
२ मन मों तनि बात बिचारि लखो तुम्हरे सुत रामसों का कम है
अति सुन्दर नाम स्वरूप भलो दोउ एक समान नरोत्तम हैं
बल तेज प्रताप भरे दोउ हैं गुण शील स्वभावहु मों सम हैं
इक भूप बनैं कस सङ्ग तजी कस दूसर होत नराधम हैं

और राम के राजा हो जाने पर भरत की क्या दशा होगी वह तुम्हे कुछ सूझती है ?

सवैया ।

ननिहाल रहैं भरि जन्म सोई यहि ठाम न आवन पावहिंगे
धन धाम सो काम नही उनके गृह-चाकर-साज सजावहिंगे
हिय मों उतसाह उमङ्ग नही कुल ते निज नाम नसावहिंगे
जगमों पुरुषारथ हीन सदा दुखड़ा करि काल बितावहिंगे

और अपना भी तो दशा बिचारो ।

दादरा ।

प्यारीसहोगी नितकैसे,सहोगी नितकैसे,कौशिल्याके शान।टेक
सबकी तुम प्राण अधारी,पिया की दुलारी,लखि निज अपमान
कितनो कहोगी दुख गाई,नृपहिं समुझाई,करिहैं न कछु कान
अहि ते दुसह बिष साना, सवति के ताना, सुनतहिं हरे प्रान
बरछी भले सहि जाई, न अस दुखदाई, जस बचन के बान
होइहैं दुसह गति तोरी, सुनहु सिख मोरी, साखी भगवान ॥

कैकयी–

तोटक छन्द ।

सखी बात तेरी फुर जान पड़े। जगमों कपटी सब लोग बड़े॥
हियमों अब तो परतीति भई । भ्रम मोह निशा अब बीति गई॥
भयलाज सों बातछिपाइ रही। तोहि छाड़ि नही कोउपाहिंकही
सखि रात देखेउं इक मैं सपना । नाहि जानत का होइहैं अपना
सगरो पुर पावक जारत है । सब व्याकुल हाय पुकारत हैं ॥
खर स्वान बिथिन मंह रोवत हैं। बहु नाग तुरँग तन खोवत हैं
जरि के बटिका-तरु राख भयो । सब पंछिन के प्रिय प्राण गयो
जनु शोणित कूप तड़ाग भरे । गृध गीदड़ सानँद पान करे ॥
बैरी मम रूप कुरूप कियो । गृह बाहर हा कच खींचि कियो॥
सुख सम्पति हा सब लूटि गई । निन्दिया इतने महं टूटिगई ॥
सुधि आवत रात की बात सखी।हिय कांपत ज्यों गज बाघलखी
सखि योग्य उपाय बताउ मोही।अबकासो कहौं दुख छाड़ितोही

मंथरा -ठीक है, महारानी जी, आप के ऊपर भारी विपद् आने वाली थी, उसी की सूचना आपको स्वप्न में मिली थी, परन्तु अब कोई डर नहीं, धीरज धर कर यत्न कीजिये ।

कैकेयी- हे सखी क्या यत्न करूं ? कुछ उपाय नहीं सूझता ।

मंथरा- उपाय तो सुगम है ।

कैकेयी- हे प्रियवादिनी, मुझसे शीघ्र कहो मैं शोक वो चिन्ता से अधीर हो रही हूं ।

मंथरा-

वसंत—तिलक ।

बातें सुनो जो मेरी अरि प्यारी रानी ।
भूषण बसन को त्यागो सुख साज सारा ॥
बिखरे खुले कचों में तन में विभूती ।
रचना कुभेष करि कोप भवन सिधारो ॥

छन्द ।

१ मनमोहनी नृप-बात सुनि मम स्वामिनी जनि भूलिहौ
केतहु रिझावन चाहहीं मन दीढ़ करि जनि डोलिहौ
बहु भांति तोहि पर प्रेम प्रगटत दीन बचन सुनाइहैं
जब लौं न [illegible]-शपथ करहिं मनिहौ न कोटि मनाइहैं
२ जब असुर-सुर-संग्राम मों नृप-यान-धूरी टूटेऊ
तुम हाथ डारि सहाय की तब अवधपति जय लूटेऊ
तब प्रेम साहस देखि के नृप तोहि को बर द्वै दियो

बनवास रामहिं राज भरतहिं लेइ शीतल करु हियो

कैकेयी-- वाह सखी तुमने ठीक समय पर स्मर्ण दिलाया यदि आज तुम सहाय नहीं होती तो न जाने भोर होते मेरी क्या गति होती।

छन्द ।

सुनुरी सखी तोहि योग्य प्रतिफल देन को कहं पाइहौं
यहि हेतु सब विधि बश भई भरि जन्म तव गुण गाइहौं
अब जातहौं हम कोप-गृह तव मंत्र हिय मंह धारिकै
शृंगार सब परित्याग करि भूषण बसन महि डारिकै

(कैकेयी जाती है- राजा आते हैं। मंथरा छिप जाती है)

राजा (घर में इधर उधर देख कर) अय रानी, आज किधर हो? कहीं दिखाई नहीं देती।

तोटक—छन्द

घर सून औ सून है सेजरिया। अरि काह भई मम प्राणप्रिया
सजि साज नवीन अधीर बड़ी। मम आस किये नितहोतिखड़ी
इत उत चितऊं नहिं देखि परे। हिय व्याकुल होत हहा हमरे
प्रिय वादिनिमोहनिगजगमनी। नहिबोलतिहाकसपिकबचनी
नहि श्रवण सुनत तव वचन सुधा। मोहि सून लगे सगरोवसुधा
कस स्वाद मिले दुख देत मोही। अबहूं लो दया नहि आव तोही
तोहि खोजि थके चंचल लोचन। अब तो मृगलोचनि दो दरशन
तुम जानति हो भलि भांति प्रिया। तुम दीप,पतंग है मोर हिया
सुनु भामिनि पूरण चन्द बिना। नहि चैन चकोरहिं रैन दिना

नहि मीन सुखी जळत्यागिकहीं।तोहिबिनुतळफुं तस मैं विरही
अब तो दुख घोर न जात सहा।कोउ बेगि बता मम प्यारीकहां

मंथरा (सामने आकर)

दोहा ।

राजाजी, कछु कोप करि, भरत लला की माय ।
अति कुभेष करि शयन की, कोप-भवन मंह जाय ॥
केहि कारण ते का भयो, सो जानैं भगवान ।
ना कछु जानउं हे प्रभो, ना कछु सूनेउ कान ॥

राजा क्या कहा ? कोपभवन ?

(राजा घबड़ाये हुये जाते हैं)

(पटाक्षेप)

तृतीय दृश्य—कोपभवन

(कैकेयी भूमि पर पड़ी है वो राजा पास बैठे मना रहे हैं)

राजाः-

सवैया ।

१ सुनु चन्द्रमुखी रिस नाहिं करो मुखते कछुबोलहु काह भयो
कस भूषणहैं बिखरे महि मों मुख क्यों तिहरो कुम्हिलाइ गयो
कस भू पर लोटहु सेज तजी कब ते यह सीखेउ ढ़ंग नयो
करिहौं कल्ह रामहिं भूप प्रिया करहू मन आजु अनन्दमयो

२ उठि बेगि प्रिया निज अंगसजो अस तोरदशा नहिभावतिहै
अति व्याकुल होत हियो हमरो कस नाहक मोहि सतावतिहै
मम प्राणप्रिया चित चेत करो,मोहिदेखि दया नहिआवतिहै?
कहु काह चहो हम काह करौं कस बेगि हमैं न बतावति है?

कैकेयी –

ठुमरी—देस ।

जानी चतुरैया मैंया बातें ना बनावो हो ।
भीतर कपट नाहिं प्रगट लखावो हो ॥ टेक ॥
जानी प्रपंच मानी गउर बतिया,
साधु रघुकुलमणि वादि कहावो हो ॥
मुखमें सुधा, विष उर में बसत है,
प्रीति प्रतीति मोहि अब ना जनावो हो ॥
बहुत दिनन मोहि मोहि रखेउ पति,
जानि निपट मुरुखा ना भुलावो हो ॥
प्रेम बिनामेउ डारि कपट छल,
बेगि हटो निज करन्ह हटावो हो ॥

राजा– (हट कर खड़े हो जाते हैं)

सवैया ।

१ उपजै बहु शोक जहां अति प्रीति यही ज:
अब बूझि पड़ी कछु शोक नहीं मन शोच व्यथा सब दूरि भई
तुम जानत हो मम प्रेम प्रिया तबहूं कस हा तुम रूठि गई

रुचि होइ सो मांगहु जांचु मोही तजि के रिस होहु अनन्द मई
२मणिमाणिकमोतिनभूषणकोष लखोचलिआजु प्रियासुकुमारी
पहिरो तनपै चहे दानकरौ निज दासिन दो जस चाह तिहारी
सुख-साज संवारन हेतु चहौ कछु, बेगि मंगाउं न लाउब बारी
परतीतिकरौतोहि लागि प्रिया तनसों निजप्राणहिं देउं निकारी
३ कहु कौन तेरो अपराध कियो छन मांह विनाश करों सबहीं
केहि रंकहिं भूप करौं छन मों केहि भूपहिं बन्दी करौं अबहीं
कहु कौन दरिद्र बनाउं धनी मन लोभ तनी न रहे कबहीं
तिहरे बश मों गृह-चाकर सेन करें जस काज कहो जबहीं
४ तिहरो मुख कंज बिलोकत हाय भयो वश मोर हिया छन मों
तव नैन विशाल की सुन्दरता मिलिहैं न कहूं मृग-लोचन मों
अति तीछन तीर नहीं जस चोग्य तेरो चखु है हिय छेदन मों
उर मों दृग-तीर के लागतहीं सुधि नाहिं रही तन मों मन मों
५सुमुखी तोहि लागिभयोकम आजुविलोकहुमोहिखड़े कर जोरे
हिय काँपत अंग खड़े सब रोम भयो अँधियार मोही चहुं ओरे
अब बेगि दया करि शोक तजो मणि भूषण आदि सजोतनगोरे
अतिहीं प्रिय राम जो हैं तिहरे अभिषेक करौं तिनके उठि भोरे

कैकेयी—

सवैया ।

जगकी कछु रीति न जात कही जेहि प्रेम करौं उलटो फल देहीं
नेवछावर प्राण कियो तोहिपै अपनो सब भांतिहिं जानि सनेही

हिय और रखौ मुख और कहौ अस तूं अब साधु गनौं कहु केही
मम द्रोहिन सौतिन सों मिलिके तुम साधत हौ हित मोर भलेही

राजा–किसने तुमको यह सब व्यर्थ शंका दिलाया है ? अनुमान का क्या प्रयोजन है ? जांच कर देखलो ।

दोः　प्रिया हर्षयुत कहहु मोहि, तुम चाहहु जो काजु ।
　　राम-शपथ करि कहत हौं, अवशि करौं तेहि आजु ॥

कैकेयी–(उठ बैठती है) मैं कहती तो नहीं परन्तु जब आपने ऐसी प्रतिज्ञा की तो सुनिये ।

सवैया ।

रघुबंशिन मों यदि जन्मलियो कुल त्यागिकरौनिजधर्मनिबाहू
रणमों कर ते हम राखि लियो रथ टूटत जानत है सब काहू
तुमहूं मोहि आदर देइ पिया 'बर मांगु' कह्यो 'जस हो चितचाहू
बर द्वू तोहि पाहिं धरी, सोइ दे अब मेंटहु बेगि मेरो उर-दाहू

राजा हां हां अभी मांग लो· मैं शीघ्र देता हूं

कैकेयी–

सवैया ।

तुम मांगहु मांगु कह्यो बहु बार तजो सुत-प्रेम रखो प्रण आजू
तुम सत्यप्रतिज्ञ कहावत हौ बर दे मोहि आजु रखो कुल-लाजू
शिर बांधि जटा कटिछाल मृगा तन छार लगा करि तापस साजू
बन रामहिं चौदह बर्ष रखौ मम पूत बुलाइ करौ युवराजू

राजा--(आश्चर्य वो शोक से) हा राम यह क्या ? हे रानी हंसी से भी ऐसा बोलना उचित नहीं तुम क्या बोलती हो ?

कैकेयी- आप का न्याय धन्य है राम के नाम पर इतना शोक वो भरत का ध्यान तक नहीं ?

सवैया ।

मम पूत दुराइ के रामहिं भूप बनावत हाय हिया बिदरैना ?
अपने कर बीज बोये फल चाखहु नित्य पखंड सो काज सरैना
सुत-नेह उते इत या रस दियो दुइ बात कबै इक संग बनैना
जब 'मांगु' कह्यो तुम बूझेउ का? तो हम मांगहों हम माग चबैना?

राजा--(शोकाकुल हो बैठ जाते हैं) हा यह कहां से वज्रपात हुआ ?

सवैया ।

हे प्रियबादिनि प्राणप्रिया सुनु ऐसो कठोर कथा जनि भाखो
राम तो मातु-पिता-गुरु-सेवक ऐसी अनीति जिये जनि राखो
राम अहैं अति पावन बालक हा दुखदैन उन्हे अभिलाखो?
बेगि प्रिया चित चेत करो कहीं अमृत धोखे न माहुर चाखो

भजन धुन रासलीला ।

भरत मोहि रामहिं सरिस पियारे ॥ टेक ॥
सांच कहों कछु नाहिं दुरावों नैनन के दोउ तारे ।
जो मैं झूठ प्रपंच बनावों शंकर देखनिहारे ॥
जो तजि हमहिं राम बन जैहें प्राण न रहिहे हमारे ।

राज प्रजा गण गुरु जन सेवक परिजन होइहैं दुखारे ॥
भरतहिं राज देउं उठि भोरहिं ना कछु हानि हमारे ।
तजहु राम-बन-वास कथा प्रिये नहि कछु लाभ तिहारे

विहाग ।

बतावो प्रिये, काह कियो तेरो राम ॥ टेक ॥
मिथिला अवधपुर सब जग जानत जैसो सरल सुखधाम ॥
लागउं पैयां प्रिये कछु तो गुनहु हिये काहे करहु बदनाम ॥
राज न दरबस मांगत रघुबर रागरहित निष्काम ॥
होइ निठुर कस बन पठवति हो कोमल तनु घनश्याम ॥
का खइहैं यामिनि कहं सोइहैं किमि सहिहैं हिम घाम ॥
होइ अबला कस पवि सम हिय भयो मोहि भयो विधि बाम

कैकेयी— अबला ? हां स्त्रियां तो अबला हई हैं , परन्तु

ठुमरी—झंझोटी ।

हमारे सैयां, देखहु बल अबला के ॥ टेक ॥
राम अहैं तुम को अति प्यारे, देहु तिलक अब जाके ॥
पुत्रवधू प्रिय पूत हमारे, दास न होइहैं सिया के ॥
जस कौशिल्या हमरे छल कीन्ही, आजु चखावों फल ताके ॥
प्राण ते प्रिय तव राम फिरें बन, तापस भेष बनाके ॥

राजा— हा राम के प्रति तुम्हारा ऐसा भाव ? यह क्या हुआ ?

सवैया ।

मन मोहनि बात सुनो चित दे रिस त्यागहु हा कस बोलतिहौ
नित प्रीति बढ़ाइ कियो बश मों अब क्यों हिय मोर मरोरतिहौ
मोहि प्रेम के नांव चढ़ाइ सदा कस हा दुख सागर बोरतिहौ
होनहार बस्यो हिय सूझत ना जेहि डार चढ़ी तेहि तोरतिहौ

हा राम ! हा राम !

कैकेयी--

छन्द ।

बर देन कहि अब देहु जनि कस हाय हाय पुकारहू
करि कुटिल सम करणी कठिन अब व्यर्थ बात संवारहू
जस भरत तोहि प्रिय प्राण सम जानत अहै तस मम हिया
करिहौ जो मम प्रतिकूल कछु तोहि निकट तजिहौं निजजिया

राजा– हाराम, तुम्हें क्या होनेवाली है जो आज मैं इस कुलघातिनी के पाले पड़ा ।

सवैया ।

१ मोहि बाण लग्योरणमोंबहुबारहहा कबहूं अस बाण नलागे
बहु भांतिन बेधि कियो उर झाझर बेदन सो सब देह सुखागे
अस तीछन तीर लगे उरमों पर देह न त्यागत प्राण अभागे
धिकहै रघुवंशिनमों मोहिजो यहिपापिनि नारिहिंसो अनुरागे
२विधि भृष्टि तुम्हार विचित्र अहै तेहिमों सबहीं ते विचित्रयेनारी
अबला असनाम महाबलवन्त ये जीति सकैं जगके भट भारी

यह काम के सेनप मायहिं के अवतार अहैं लखु लोगबिचारी
अति सुन्दर वो सुकुमार शरीर रखैं हिय भीतर तीर कटारी
३ नल लोचन-डोर लसामुसुकान लपेटिके घूंघटओट तेनारी
नर सावज को ढ़िग खींचिसदा अहिफांससुकेशतेबाधिंसंवारी
अधरान कपोलन ते मद पान करावत बेगि हरे मति सारी
सबलोगसुनो नित दूरि रहो इन व्याधनते भलि भांति विचारी
४ चितचैन मिलै नहिं एक घड़ी इक बार इन्हैं निरखै नर जोई
छुटकार नहीं कबहूं इनते मुनि साधु महा तपसी किन होई
इन नारिन की जनि छांह पड़े दिन रैन उपाय करौ तुम सोई
लखि मोर दशा अबसो जगमों इनकी परतीति करै जनि कोई

जवनिका पतन

तृतीय—अंक

प्रथम दृश्य—राजद्वार—प्रातः काल

(बन्दीजन गान कर रहे हैं)

भैरवी ।

१ देखहु कंज कलिन व्यवहार ॥ टेक ॥
चार पहर यामिनि तप कीन्हीं, रवि पिय लगि निरहार ।
एक चरण जल मांह खड़ी तन, कोमल अति सुकुमार ॥

नव युवती अस लाज भरी अब, स्वामिहिं बाट निहार।
थरथरात लचखात लखो मुख, सोहत बुन्द तुषार॥
जस जस भानु सोहागिनि तन पर, निज कर करत पसार।
लखहु न बिकसत बन्द कली मुख, तम तस करत उघार॥
मध्य दिवस जब हावभाव ते, रहेउ न लाज बिचार।
घूंघट खोलि खिले मुख पूरण, करत कलोल विहार॥
सांझ समय जब स्वामी विदा भये, सोग वियोग अपार।
बिछुड़तहीं मुरझात आस तजि, सत्य प्रेम भर्तार॥
जग-नारिन-हित-हेतु सोई, उपदेशति बारहि बार।
बिनु भये अचल प्रेम पिय मों तिय, कबहु न होत उधार॥

भैरवी।

२ भंवरा रस खोजन लागे री।
भंवरीसंग रातहिं केलिकियो अब,होतप्रभातहिं भागेरी।टेक।
विकसी कलियां लखि धावतहै, उमगे अति प्रेमहिं पागे री।
मधुरो सुर बोलत प्रीति भरे, मकरन्दहिं सो अनुरागे री॥
ढिग बैठि महा सुख स्वाद लुट्यो,इन मों रस चूसि परागे री।
इकत्यागि दुजे ढिगधावत कामहिं के बस लाजनलागेरी॥
कितबार इन्हें निशि बन्दी कियो,तबहूं निजबान न त्यागेरी
अब हारि थक्यो कछु सूझत ना, सबअंग उपाय भुलागे री
पछताती कली निज हाथ मली,बहु भांति जली बिरहागेरी
अवधेश उठो कछु न्याय करो,करजोरि खड़ी तोहि आगे री

हम दीन दुखी प्रतिपालक तूं, कछु दंडहु जाइ अभागे री
अब सोवन को नहीं काल रह्यो, नृप देखु सभी जगजागेरी

दादरा—भैरवी ।

३ ढिग आजा आजा आजारी, चकई पिय-अंक समाजारी ।
अबभोरभयोनिशिबीतिगई, सबसोग वियोग भुलाजारी ।टेक।
रवि देखतहीं शशि छीण भयो, कहुं जाइछिप्यो भयलाजारी
नलिनी सब हा मुरझाइ गई, अस देखि दशा निशिराजा री
पंछीगन बास तजे सगरो, उड़ि खोजत कीट अनाजा री
फुदकात फिरौ कस डारन पै, कछु गान हमें ना सुनाजा री
चहुं ओर लखो तम नाश भयो, रवि तेज प्रचंड विराजा री
शिशु बृद्ध युवा निज खाट तजे, सब लोग लगे गृह-काजारी
अनुशासन लों सब द्वार खड़े, तिहरे विनु होत अकाजा री
कटि बांधहु आलस नीन्द तजो, अब वेगि उठो रघुराजा री

सुमंतः- आज क्या कारण है कि महाराज अबतक नहीं उठे ?

गवैया - कृपानिधान, कुछ रंग में भंग जान पड़ता है . गाने में भी जी नहीं लगता ।

सुमंत - अच्छा मैं जाकर देखता हूं क्या बात है ।

(सुमंत जाते हैं)

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य—कोपभवन

(राजा पृथ्वी पर विह्वल पड़े हैं अश्रु प्रवाह बह रहा है, कैकेयी

अलग बैठी है। सुमंत आते हैं)

सुमंत - (चकित हो कर) ये यह क्या देख रहा हूं ? महाराज अपराध क्षमा हो, कुछ तो कहिये किस कारण आप की यह दशा हो रही है, महारानी जी, कुछ आप तो बोलिये।

कैकेयी -

दोहा।

रामहिं जाइ लेआवहु, मंत्री परम सुजान।
रामहिं राम रटैं नृप, बिलपत कीन्ह बिहान ॥

सुमंत - अभी जाता हूं।

(सुमंत जाते हैं)

पटाक्षेप

तृतीय दृश्य—सीता भवन

[श्री रामचन्द्र आसन पर बैठे हैं : सीताजी सामने खड़ी हैं]

सीता - हे प्राणनाथ आज आप के राज्याभिषेक का दिन है, पखवारों से नगरोत्सव हो रहा है, समस्त प्रजागण आप के मंगल रूपी समुद्र में निमग्न हैं उनके आनन्द कीआज सीमा नहीं है, परन्तु आप की यह क्या दशा हो रही है ? किस सोच में आप व्यग्र हैं ? आप की अर्द्धांगि भी उस चिन्ता की भागी होना चाहती है।

राम - प्रिये, मैं तुमसे कदापि कुछ नहीं छिपाता, सत्य तो यह है कि इस उत्सव से मेरे हृदय में उमङ्ग नहीं उठता, मैं बड़े संकोच मे पड़ा हूं।

सीता - किस बात का संकोच ? कुछ भी तो कहिये।

राम – प्रिये, बिचारो तो सही चारो भाई एक ही दिन जन्म लेकर साथ साथ पाले गये, भोजन खेल विद्योपार्जन सब कुछ साथ साथ हुआ, आज सब को छोड़ मुझे अकेले राज्य हो? सो भी भरत सत्रुहन के पीछे में? मैं उन्हे क्या मुह दिखाऊंगा।

द्वारपाल – महाराज, मंत्रीजी आये हैं।

राम – अभी बोलावो।

(सुमंत आते हैं)

राम – प्रणाम मंत्रीजी महाराज।

सुमंत –

दोहा।

चिरजीवहु रघुबंशमणि, अचल करहु तुम राज।
सुख भोगहु सिय सङ्ग नित, पुरजन सहित समाज॥

राम –

दोहा।

कहहु व्यग्र केहि हेतु तुम, आयउ धाइ प्रभात।
तन मलीन अति दुखित मन, समुझि पड़त नहिं बात॥

सुमंत–

दोहा।

बेगि चलिये नृप-भवन अब, मोहि संग कृपा निधान।
देखन चाहहिं भूप तोहि, मर्म सुन्यों नहिं कान॥

राम– चलिये

(राम वो सुमंत जाते हैं)

पटाक्षेप

चतुर्थ दृश्य—कोप भवन ।

राम– पिताजी प्रणाम, माताजी प्रणाम ।

कैकेयी–बेटा चिरंजीवी हो ।

राम–

सवैया ।

अरिकाहभयोकेहिलागि दशा अस मोहि कहो किन बातबुझाई
जननी केहि कारण कोप-गृहे लखितोरदशा कछु बोलिनजाई
पितु लोटत हैं भुंइं धूर लगे मणि-माणिक-माल मही छितराई
अब बेगि बताउ उपाय मोहीजेहि ते मिटिजाय व्यथाविकलाई

कैकेयी–हे पुत्र

सवैया ।

तेहि लागि दशा अस भूपति कीसुनु और नहीं कछु दूसर बाता
पितु-प्राण रखो दुख दूरि करो सुतहै पितु के दुखमोचन त्राता
तव धर्म यही सुत अर्थ यही तुम तात अहो निगमागम-ज्ञाता
सब काज तुम्हारहिं हाथ अहे सुत बेगि करो अब जो मन भाता

राम–

सवैया ।

१ तव बात न बूझि परी जननी तनि मोहि कहो पितु काह चहैं
सब काजन मों प्रण मोर सदा जेहि मों जननीपितु मोद लहैं
पितु के हित जो हम नाहिं करौं अस काज हमें जग नाहिं अहैं
धन धाम त्रिया निज प्राणहु को छन मांह तजौं जो पिताजुकहैं

२ जेहि पूत ते पावत क्लेश पिता बिनु अर्थ सोई नर देह धरै
जननी निज गर्भहिं व्यर्थ रखै पितु पालन पोषन व्यर्थ करै
चहिये सुत को सुख सम्पति त्यागि पिता-हित पावक मांह जरै
जलधार गिरै गिरि कूदि मरै बिष पान करै नहिं काल डरै

कैकेयी--धन्य हो बेटा तुम को छोड़ कर दुसरा कौन ऐसा बचन बोल सकता है ।

सवैया ।

१ मातु पिता परिवारहिं सेवत राम अहौ सब लोग दुलारे
प्राण-अधार अहौ नृप के छनहूं नहिं चाहत नैनन न्यारे
दो बरदान दियो मोहि भूप न बोलत लाजरु प्रेम तिहारे
चौदह वर्ष तुम्हे बन बासरु राज करैं प्रिय पूत हमारे
२ निज वाक्य बंधे नृप भूमि पड़े सरसीरुह नैन बहैं जल धारो
असमंजस मों अति व्याकुल हैं नहिं जानेकहैंनहिं राखनिहारो
सुत ताहि गिनौ सहि कष्ट सदा पितु मातु करै दुख ते निस्तारो
तोहि लागि पिता अतिहीं दुख पावत संकट ते अब बेगि उबारो

राम– हे माता क्या पिताजी इसी बात के लिये इतना क्लेश उठा रहेहैं ? हा ! प्रथमहिं मुझे क्यों नहीं बुलाया ? ऐसे लघु बात के लिये इतने समय तक इस भांति दुखसहने का क्या प्रियोजन था ? (दसरथ प्रति) हे पिताजी आप मेरे लिये कदापि चिन्ता न करें अब मेरे ऊपर कृपा कर अपने मन का दुख दूर कीजिये, मैं सानन्द अभी बन गमन करताहूं और अयोध्या के लिये ।

सवैया ।

लघु भ्रात बनैं अवधेश इतै याहि मों हमहीं कछु खेद न है

अति बीर वो धीर गंभीर अहैं उन में हम में कछु भेद न है
तव आयसु पालन जात अहौं मोहि स्वर्ग समान सोई बन है
नहिं सत्य तजो तुमआजु पिता सतही रघुबंशिन को धन है

दशरथ—

ठुमरी—पीलू ।

कहहु केहि भांति धरौं उर धीर ।

तुम अस सुत बन गमन करत हा, पहिरे बल्कल-चीर ॥ टेक॥
कठिन पंथ सङ्गी नहिं कोऊ, अति सुकुमार शरीर ।
नर शोणित के तृषित चहूं दिशि, फिरत निशाचर बीर ॥
राज करौं हम तुम नित बिचरहु, बन बन भेष फकीर ।
हा, अस सोचत हिय फाटत है थम्हत नयन नहीं नीर ॥
हा हम जानेउं ना तेहि अवसर, पापिनि बेधिहिं तीर ।
छल बल करि मम प्राण हरति हा, सहत बनै नहीं पीर ॥

राम—

सवैया ।

१धरि धीर पिता चित थीर करौ बनिहैं नहिं काज किये बिकलाई
सुत-प्रेम के हेतु न नेम तजो यश-हानि करौ जनि सत्य गँवाई
शिवि औहरिचन्द दधीचि कथा अपने कुलकी सुमिरौ चितलाई
कुल लोग सबै धन धाम तज्यो तनु प्राण तज्यो रखि एकसचाई
२कर जोरि कहौंसुनुबात पिता मोहिबालक जानि के ध्याननदेहू

नित वेद पुराणन मांह सुन्यो सतधारिन को अति बैरी सनेहू
निज कीरति भङ्ग भये बनि निन्दित मान गये सुख ना सपनेहू
हिय पै पवि राखि रखो प्रण को जग मौं परलोकहुं मों यश लेहू
३ कालहिं जात न देर लगै तिहरो प्रण राखि तुरन्त फिरैंगे
मोर तिहार भलो यहि मों सुख सो हम कानन मों बिचरैंगे
करिहौ जब तूं मन दीढ़ पिता परिवार प्रजागण धीर धरैंगे
हम बेगि प्रबोधि तिया जननी तोहि शीश नवाइ पयान करैंगें

(रामचन्द्र जाते हैं)

दशरथ—हा राम, हा राम, सर्वनाश हुआ चाहता है ।

सवैया ।

बृद्ध भये सुतचार मिले तेहि मों सबते प्रिय हौ तुम ताता
बालपने मुनि-सङ्ग रहे अब जात अहो बन काह बसाता
का अस चूक भयो हमसो जेहि ते अस हैं दुख देत बिधाता
हा अस लाल कहां पइहौं इनके बिनु हा जग सून लखाता

दोहा ।

सुत-बियोग अति सुभट लखि, धीरज गयो पराय ।
केहि बलते चित थिर करौं, भयेउं आजु असहाय ॥

पटाक्षेप ।

पंचम दृश्य—हाट ।

(नगर की कई स्त्रियां इधर उधर से आती हैं)

१ – सखी, यह क्या सुनती हूं ? कुछ कहते नहीं बनता ।

२ – हां सखी, मैं ने भी तो अभी सुना है राम ऐसे बालक को बनवास ?

सो भी यकायक आज, जब उनके अभिषेक की सामग्री इकट्ठी हो रही थी ? हा विधाता की विचित्र गति है

३ - सखी इसका कुछ कारण नहीं जान पड़ता कैकेयी का स्वभाव क्यों कर ऐसा उलट गया ।

सवैया ।

अरि पापिन बज्र गिराइ दई सबहीं कर प्राण लई छन मों
पुरलोगन प्राण-अधार हैं राघव ताहि पठावति है बन मों
कोउ नाहिं कियो तस काज करै कछु लाज न शील अहै तन मों
कबि सांच कह्यो नित औगुण आठ रहे अबलागण के मन मों

४ - और ऐसे सज्ञान वो न्यायी राजा को न देखिये ।

सवैया ।

शील संकोच बिचार तजी अस पूत पठावत हैं बन घोरा
कानन में बहु क्लेश सखी सहिहैं कस सुन्दर श्याम किशोरा
भूपति के हिय पाहन है जब ध्यान करौं बिदरै हिय मोरा
काम के किङ्कर हैं नरनायक जो अस कारज कीन्ह कठोरा

५ - सखी एक राजाही को क्यों कहती हो ? काम के बश कौन नहीं हैं?

कजली, धुन बनारसी ।

सखिरी कौन भयो जग मों जाको रतिनाथ न मार्‌यो तीर ।टेक
१ जो ब्रह्मा बिरच्यो जग छिति जल पावक गगन समीर ।
निज कन्या पर सोउ लोभान्यों ऐसो मनसिज बीर ॥

२ निकसत चौदह रत्न सिंधु ते भयउ सुरासुर भीर।
धाइ विष्णु लक्ष्मिहिं अपनायो कोउ जग रहेउ न थीर॥
३ देह धरत हरि बृन्दावन मों त्यागि समुन्दर छीर।
बिरचत रास करत बहु लीला हरत गोपियन चीर॥
४ मोहनि रूप लखत हरि केरे रीझे शिव गम्भीर।
अन्तर ध्यान भयो जब सोई टपकत नैनन नीर॥
५ नारद ऐसो ब्रह्म ऋषि जिन्हके वस सकल शरीर।
ऐसो तपसी को मन छन मों कीन्ह्यो मदन अधीर॥
६ देव दनुज किन्नर मुनि भूपति बीर औलिया पीर।
घायल मदन तीर सब जग मों साधू सन्त फकीर॥

७ – सखी ठीक है।

सवैया।

देवन को जब थाह नहीं सखि कोशल राउ तो मानुषही है
काम के बाण लगे जेहि ना तिहुं लोकन मों अस बीर नहीं है
बेद पुराण मुनी कवि शारद काम के घोर प्रताप कही है
भूपति के कछु दोष नहीं जो न काम करावइ थोर वही है

८ – एक बुढ़िया।-धन्य तुम लोगों की बुद्धि है, तुम कामिनियों को तो कामदेव अवश्य अजय जान पड़ेंगे, यहां तक कि तुम सब के विचार में काम रिपु महादेव जी भी काम के वश में ठहरे। अब औरों की कौन गिनती है, अरी मूर्खों, कुछ विचार कर बोलना उचित है, तात्पर्य्य बिना जाने बड़ों के विषय में शीघ्र ऐसा बोलना अत्यन्त वर्जनीय है। जहां तक मैंने सुना है विचारे महाराज अपने सत्य वचन से बहु अति दुखी हो रहे हैं कदापि काम के वश नहीं हैं, वे तो किंकर्तव्य विमूढ़ हो रहे हैं।

३— राम नगरोत्सव के समय जब मंथरा हाट पर आई थी तो उसके भावों से द्वेष प्रगट होता था, न जाने कहीं उसी की करनी न हो ।

एक बालक ।-चलो मा, हम सब उन के साथ बन में चलें ।

वृद्धा ।-बालक ठीक कहता है, चलो अब चलने की तैयारी करें, संग रह कर उन्हें कदापि दुख नहीं होने देंगी ।

(सब जाती हैं) अवनिका पतन ।

चतुर्थ अंक

प्रथम—दृश्य ।

(कौशिल्या ध्यानावस्थित हाथ जोड़े स्तुति कर रही हैं)

॥ भजन स्तुति धुन ठुमरी लखनौआ ॥

जयजयजय शिवशम्भु कृपाला, जयगिरिजाबर जयअविनासी
अंगविभूति लसैतन व्याला, दिशाबसन नित मरघटबासी ॥
कंठ गरल गले मुंडन माला, भेष अमंगल मंगल रासी ।
गंगजटा सोहैं शशिभाला, अनुपमछबि तनअर्द्ध त्रियासी ॥
आसनअति सुचि केहरिछाला, सहितउमा कैलाश निवासी ।
कोमळ चित्त द्रवहु ततकाला, राग न रोष परम सन्यासी ॥
तुमसम ना कोउ दीनदयाला, जन उद्धार करत नितकासी ।
सुखसों राज करहिं ममलाला, देहु दयाकरि सो बरदासी ॥

आरती ।

आरति लागी पारवती की, तुमसम ना प्यारी कोउ पीकी ।

जय जगतारणि कष्टनिवारणि, दैत्यसंहारणि जय गौरीकी ॥
शंकरसंग कैलास बिहारिनी, मंगलकारिनी जय जननी की ।
पाळतहरत सृजत जगको तुम, बरदायिनी अहौ सबहीकी ॥
मातु कृपाकरि दासी निहारहु, पुरवहुआस मेरी अबजीकी ।

(रामचन्द्र आते हैं)

राम ।–माता जी प्रणाम ।

कौशल्या ।–

सवैया ।

चिरजीवहु लालन राज करौ जबलौं रवि चन्द्र रहैं जगमाहीं ।
बळतेज प्रतापबढ़े नितहीं अबलोकत लोकप आदिसिहाहीं ॥
उपवासहिं ते मुख-कंज-कली मुरझाइ गईछबि सून लखाहीं ।
सुतबेगि नहाहु जोचाहहु खाहु पिता ढिगजाहु समै अबनाहीं ॥

राम ।–हे माता ये सब बातें उलट गईं, पिता जी की कैकेयी माता की आज्ञा से मैं अभी बन जाता हूं ।

कौशल्या ।–हे पुत्र, यह क्या कहते हो ? क्या मैं स्वप्न देख रही हूं ।

सवैया ।

अरे काह भयो केहि कारन भूप कठोर बनी बन तोहि पठावत
तुमशुद्ध स्वभाव सुशील अहो परिवार प्रजासबकेमन भावत
तुमसेवत मातु पितानितहीं कैकेयी तोहिपै अति प्रेम जनावत
हमहूं नहिंचूक कियो कबहूं केहिकारण हा विषपान करावत

राम ।–हे माता इस में शोक करने का कुछ कारण नहीं है ।

सवैया ।

रणमों लघुमातु दुई बरदान लियो पितुसों तेहि कारणआजू ।
उनके सुत भूपभये इतहीं अरु दीन्ह पिता मोहिं काननराजू ॥
बनितापस चौदह सम्वतलौं बनजात अहौं तजि संगसमाजू ।
तजिप्रेमहिं आशिष देइ बिदाकरुमातुअबै न तु होत अकाजू ॥

कौशल्या ।–हा सुत, तुम ने तो कभी राज्य की इच्छा भी नहीं प्रगट की और मैं ने भी महाराज से इस की चर्चा कुछ नहीं की फिर बनवास क्यों ।

सवैया ।

१ कोउ भूप बनै कछु खेद नहीं नहिं राज के लोलुपहैं सुत मेरो
बनवास कथाहिय सालतहै जग हा मोहि आज लखात अंधेरो
तनकोमल वो सुकुमार भला सहिहैं कस कानन क्लेश घनेरो
हिम घाम सभै नहिं ठाम मिलै रजनीचर बृन्द फिरैं बहुतेरो
२ सुतप्राणके एक अधार तुही अब जात भयानक कानन हीं
अतिहीं सुकुमार न संग कोऊ बिपदा कछु आइ पड़ै न कहीं
तिहरो घरमों सिय सुंदरि है हमरौं इक पूत अहो तुम हीं
बन-जीव सदा नर-भोजन खोजत तात फिरैं इतहीं उतहीं

राम ।-हे माता, तुम बीर कन्या बीर पत्नी, वो बीर माता हो, तुम्हें भीरु होना कदापि उचित नहीं, तिस पर भी

सवैया ।

तुम धीर गम्भीर स्वभाविक हौ पितु आयसु पालन जाने कहौ

तुम आरज नारि कहावति हौ चित दीढ़ करौ सबक्लेश सहौ
नहिं सोंच करो मनमों तनिको हम आनन्द सों बनजात अहौं
अनुशासन देहु हिये हरषे जेहि ते बनमों सुख मातु लहौं

कौशल्या ।–हाय, हाय, अब–

सवैया ।

काह करौं कछु सूझत ना विधि बाम भये कछु नाहिं बसाई
ब्राह्मण पारबती शिव पूजत हा उलटो फल आजु लखाई
दास पिता परिवार प्रजा कहं प्राण समान अहैं रघुराई
हा कैकैयी सबहीं कर प्राण निकारति है बन राम पठाई

ठुमरी ।

कैसे भुलब तोहि लाल हमारे हो ॥ टेक ॥
घुंघरवारे कच श्याम बदन तव, लोचनयुगल कमल अरुनारे हो
भोली२बोलियासुनबअबकैसे, कोअबमैयाकहिहमहिंपुकारेहो
बूढ़भये नृप कामिनि बसहोइ, काजकरत अस बिनहिं विचारेहो
हे विधिजनि लावहुकोउलेखे, जायजो दिनबिनु इनहिंनिहारेहो
कैसे भुलब तोहि लाल हमारे हो ॥

भजन मलार ।

कहहु केहिं लागि रखौं निज प्रान ।
राज प्रजा तजि तुम अस सुत अब, कानन करत पयान ॥टेक॥
बछवा गृह मों रछित गुनि गऊ, बिचरत बन रखि ध्यान ।

सांझ समय थन श्रवत पयस, हुंकारत आव बथान ॥
तुम उलटो तजि मातु चले अब, कानन होत बिहान ।
नृप की अस अनरीत लखत हिय, फाटत कठिन पषान ॥
चौथेपन बिधि दीन्ह सुअन अस, साधु सकल गुणखान ।
सो बिछुड़त कस धीर धरौं गृह, लागत मनहुं मसान ॥
कहहु केहि लागि रखौं निज प्रान ॥

राम—

सवैया ।

१ जननी तजि मोह बिचारु हिये पितु वाक्य बंधे कहु काह करैं
रघुबंशिन सत्य निवाहन है निज प्राण गये प्रण नाहिं टरैं
नित देवन सों बर मांगु यही नहिं भूप कभूं चित और धरैं
पति-आयसु-पालन धर्म तेरो यहि ते सब संकट पाप हरैं
२ पति-आयसुमों बनि बाधक तूं जनि लेहु कलंकबृथा सुनुमाता
तजिसोंच सदाशिर धारिये मातुपिता पतिवो गुरु लोगनबाता
अति पातक होत बिचार किये करु सोइ तजो फलहाथ बिधाता
तबहूं बिपदा यदि आन पड़े सुख सों सहिये कछु नाहिबसाता
३ धर्म के पंथ कठोर बड़ो जग-प्रेम फंसे नहिं सत्य लखाता
मानव बुद्धि न देख सकै बहु दूर लों कारण-कारज-नाता
आदि सो अंत लों देखि शुभाशुभ कर्म फलाफल देत बिधाता
मातु न दूसहु ईश कभूं नित ध्यान धरो शिव मंगलदाता

(लक्ष्मण आते हैं)

लछमन–हे भ्राता, मैंने अभी सुना है कि राज छोड़ अब आप बनवास को चले, अनुचित क्षमा हो। आप को सीधा समझ जिसके जी में जो आता है आज्ञा दे डालता है और आप उस के पालन करने को प्रस्तुत हो जाते हैं।

रोला छन्द।

बिनय करौं कर जोरि सुनिये प्रभु बिनती मोरी।
अचल राज रघुराज करिय पुर बरिस करोरी॥
जो मनहूं महं भरत कबहुं प्रभु अशुभ बिचरिहैं।
होइ स्वतंत्र प्रतिकूल नाथ कबहूं यदि करिहैं॥
तो मैं भरतहिं बेगि हतब निज कठिन कृपाना।
हमहिं सुयश वा कुयश होउ सुनु कृपानिधाना॥
तब रिपुबनि यदि काल आइ तोहि समर प्रचारे।
सकौं पलक महं मारि सुनहु प्रभु कृपा तुम्हारे॥
प्रभु कैकयि-बश होय पिता अस आयसु दीन्हा।
लोक लाज सब खोइ जगत महं अपयश लीन्हा॥
करिये अवध कर राज उचित नहिं यह अनुशासन।
भरत कैकयी नृपहुं देखिहौं सुनु खल नाशन॥

राम–

सवैया।

कछु संशय नाहिं अहै यहि मों तुम वीर वो धीर अहो प्रिय भ्राता
मम ऊपर प्रेम अगाध रखो यहि ते अति क्रोध भयो तोहि ताता
हमहीं प्रिय प्राण-समान अहो तव शुद्ध स्वभाव प्रपंच न भाता

प्रिय भ्रात बिचारि लखो मनमों धनधामसबै पलएकके नाता

हे ताता इस लिये क्रोध करना उचित नहीं; क्रोध क्या बस्तु है औ उसका उत्पत्ति औ बिनाश कैसे होता है जानना योग्य है।

रोला छन्द।

सुनहु तात मम बात कहौं तोहि पाहिं बुझाई।
जो सुनि भोगि जगतसुख नर सुरलोक सिधाई॥
काम क्रोध अरु मोह तीनि अरि जानहु जन के।
थीर रहन नहिं देत करत मन चपल सबन के॥
सकल जगत बौराइ कीन्ह अपने बस बरबस।
तन मन धन सबहीं कर ये हरि लीन्हों सरबस॥
इन्द्रिन्ह दास बनाइ अहर्निशि काज करावत।
जस चाहत नित सकल नारि नर नाच नचावत॥
इन्द्रियादि मन बुद्धि तात इन कर है थाना।
अति बलवन्त अजय रिपु मुनि गण करत बखाना॥
बिनु इनहीं नहिं चलत जगत-कारज सुनु भ्राता।
प्रवृति-मार्ग-हित हरि उपजायो रज-गुण-जाता॥
प्रथम काम अति प्रवल आदिकारण जिय जानो।
सुर नर मुनि बस कीन्ह तबहुं हिय नाहिं अघानो॥
हिय महं पैठि यथा रुचि सबहीं खेल खलावत।
इत उत प्रेरत मनहिं शुभाशुभ कर्म करावत॥
अग्निहिं धूम छिपावत जस जस मुकुरहिं मैला।

यामिनि जग तम छावत जस जस गर्भहिं थैला ॥
सोइ प्रकार बिज्ञान ज्ञान को काम छिपावत ।
सत्य ढांकि जग झूठहिं को करि सत्य लखावत ॥
यहि ते उपजत क्रोध बिफल जब होत मनोरथ ।
ठहरन देत न पग छन एकहु परमारथ-पथ ॥
गुरु जेठन कर ध्यान रहत नहिं शील संकोचू ।
क्रोध पाप कर मूल लषण निज जिय मों सोंचू ॥
सर्पहुं ते तीछन बिष रिस को जानहु जिय मों ।
हानि करत दूसरहुं और उपजत जेहि हिय मों ॥
यहि ते उपजत मोह नसावत हैं चित-चेतू ।
धर्माधर्म-बिबेक केर तब टूटत सेतू ॥
निगमागम कर सकल ज्ञान छन मो बिसरावत ।
बुद्धि भ्रष्ट करि बहुत भांति नित पाप करावत ॥
बुद्धि नाश करि नाश करत सबहीं छन माहीं ।
सज्जन अस परिणाम देखि नित दूरि पराहीं ॥
क्रोध मोह नहिं जाय काम रह जबलगि तन मों ।
क्रोध रोकि रहहु नित काम-बिनाश-यतन मों ॥
काम सकल जग जीति महा अभिमान कियो जब ।
सुमन बाण ते शम्भु-समाधी भङ्ग कियो तब ॥
देखि उपद्रव बेगि उमाबर जारेउ कामहिं ।
तेहि डर आवत जात नाहिं शिवभक्तन धामहिं ॥

सुमिरहु सेवहु ध्यान धरहु नित काम नशावन ।
काम क्रोध अरु मोह नाशि करिहैं तोहिपावन ॥

लक्ष्मण-हे भाई, पिता जी का अन्याय देख, सो भी आप ऐसे पुत्र के प्रति, मुझ से सहा नहीं गया ।

राम - हे लक्ष्मणजी, पुत्र का धर्म बड़ा ही कठिन है ।

सवैया ।

जगमों यश-भाजन पूत सोई पितु आयसु को चितलाइ करै
कछु ऊंच न नीच विचार करै प्रति पाळत आयसु मोद भरै
प्रिय भ्रात सुनो बन तो कछु ना पितु-हेतु रसातल कूदिपरै
सोइ उत्तम पूत कहावत जो जननी पितु के अनुकूल चरै

लक्ष्मण - हे नाथ, मैं अबोध बालक आप के प्रीति युक्त वचनों का उत्तर नहीं दे सकता ।

सवैया ।

मातु पिता गुरु बंधु सहायक देव सखा सब हो तुम भाई
झूठ प्रपंच बनाइ कहौं विधि चाहहिं सो मोहि देहिं सजाई
मो कहं त्यागि चले बन को अब काह करौं कछु नाहिं बुझाई
मान दुलार हमार रखी प्रभुदो मोहिं आयसु दास कि नाई

राम - हे भाई, अधिक प्रेमवश होना उचित नहीं अपना कर्तव्य कर्म अवश्य करना चाहिये ।

सवैया ।

१ तात सुनो पितु मातुहिं सेवत तीनहुं लोक में होत बड़ाई

या जग मों बहु भोग करै अरु अंत समय सुरलोक सिधाई
दास प्रजा परिवार सबै अति दीन दुखी हमरे बिनु भाई
तू अवलम्ब रहो सबहीं कर नाहिं तो होई बड़ी कठिनाई
२ प्रियभ्रात न शोककरो मनमों तोहिमों अतिधीरजऔ चतुराई
दुखकाल जो धीर धरै मनमों सोइ तो जगमों बड़धीर कहाई
हमरे दुखसों अति व्याकुलहैं पितमातु प्रजागृह चाकर दाई
तुमतात रहो परितोष करो नहिं तो सब नाहकहीं मरि जाई
३ तुम मानहु बात मेरी चित दे सबकी सुधि लो घरहीं रहिके
हमरे दुख-सागर बूड़त लोगन पार करो बहियां गहि के
पितु-मातु-कलेशहिं दूरि करो नित वेद-पुराण-कथा कहिके
रघुबंशिनकी अस रीति सदा निज धर्म्म रखें दुखको सहिके

शत्रुघ्न -

भजन खम्माच ।

नाथ मैं बालक अतिहि नदान ॥ टेक ॥

जो रघुपति मोहि तजि बन जैहो, नहिं बचिहैं मम प्राण ।
मैं सेवक बिन मोल तिहारो, राखहु मेरो मान ॥
ऐसो दुख प्रभु कबहुं न देख्यो, ना सून्यो अस कान ।
सो हम नैनन आजु निहारत, प्राण न करत पयान ॥
सब कर तोष करब हम कैसे, हे प्रभु परम सुजान ॥
पुर परिवार न एकहु भावत, चित तव चरण लुभान ॥

सवैया ।

प्रभु तूं तिहुंलोक के नाथ अहौ हम तो तव सेवक काहकहौं
यहिमों कछुना हमरो वशहै असआयसु जो मोहिं देतअहौं
हम जानत धर्म्म न कर्म्म कछू तव प्रेमहिं मों नित बूड़ि रहौं
तिहुंलोक की सम्पति धूरि गुनौं तव पंकज-पाद-प्रसाद चहौं

(लक्ष्मण रामचन्द्र के चरणों पर गिरते हैं, नेत्रों से जल गिर रहा है)

राम – हं हं भाई यह क्या कहते हो (पकड़ कर उठाते हैं)

छन्द ।

अब चलहु बन प्रिय भ्रात लछुमन उठहु शोक दुरावहू ।
तव प्रेम पावन विदित है कछु शंक जनि जिय लावहू ॥
जनि करहु बदन मलीन तुम हिय सोंच सब बिसरावहू ।
अब समय नाहिं बिलम्ब कर निज मातुसों मिलिआवहू ॥

लक्ष्मण – जो आज्ञा (लक्ष्मण जाते हैं)

राम – (माता प्रति)

दोहा ।

सुनहु मातु अब जात बन, बन्दौं दोउ कर जोर ।
चरण कमल युग पूजिहौं, बन ते आइ बहोर ॥

अब प्रसन्न हो आशीर्वाद दो (मस्तक नवा प्रणाम करते हैं)

कौशिल्या –

सवैया ।

हमजो कछुपुन्य कियो जगमों मिलिहोहु सहाय लला परमेरे

बन देविन देव मुनी तपसी तोहि ऊपर होंहि दयाळ घनेरे
बनके सब जीव निशाचर भील तजैं निज स्वारथहों तव चेरे
निज सुन्दर आनन बेगि देखाइ करौ हिय शीतल मातुहिकेरे

(राम जाते हैं)

पटाक्षेप ।

द्वितीय दृश्य—सुमित्रा भवन ।

(सुमित्रा जी आसन पर बैठी हैं)

(लक्ष्मण आते हैं)

लक्ष्मण – माता जी प्रणाम ।

सुमित्रा – हे पुत्र तुम सदा आनन्द रहो ।

दोहा ।

कहहु तात कब सुदिन है, राम तिलक कर आज ।
गुरु बशिष्ट सब सचिव गन, काह करत महराज ॥

लक्ष्मण –

सोरठा ।

काह कहौं हम मातु, भयउ वाम सब भांति विधि ।
राम चले बन प्रात, नगर नारि नर बिलपहीं ॥

छन्द ।

छल सो लियो बरदान दुइ सुनु मातु पितु सन केकई ।
चौदह बरिस बनवास रघुबर भरत को टीका दई ॥
बिनती करों कर जोरि जननी मम बिनय यह मानहू ।
मन मुदित आयसु देइ मोहिं रघुबीर-संग पठावहू ॥

सुमित्रा–

सोरठा ।

कीन्ह उपद्रव आजु, हाय पापिनी कैकेयी ।
उर संकोच न लाज, दया रहित अति कठिन हिय ॥

छन्द ।

बन जाहु रघुबर-सङ्ग घर कर सोंच जिय जनि लावहू
दोउ चरण सेवत आजु सुत जग जन्म को फल पावहू
नहिं राम अस जग भ्रात सुत पद कञ्ज निशिदिन चांपनों
संयोग अस नहिं होत पुनि पुनि भाग्य जानहु आपनों
२ मन कर्म बच अभिमान तजि पितु सरिस रघुबर सेइहौ
शुचि कन्द मूल जेंवाइ रामहिं तात तब तुम जेंइहौ
जेहि भांति राम अनन्द सों दश चारि वर्ष बितावहीं
कर्तव्य तात तिहार सोइ हम बहुत का समुझावहीं

लक्ष्मण– माताजी प्रणाम ।

सुमित्रा– चिरंजीवी हो बेटा, नित नित राम पद में तुम्हारा प्रेम बढ़े ।

(लक्ष्मण जाते हैं)

पटाक्षेप

—:o:—

तृतीय दृश्य—सीता भवन ।

(श्री रामचन्द्र जी सीताजी के साथ आसन पर बैठे हैं)

सीता– हे प्राणनाथ, आप कुछ चिन्तित जान पड़ते हैं, और कुछ व्यग्रता भी झलक रही है, क्या कारण है ?' मंत्रीजी चौरेंहीं

आप को किसलिये साथ ले गये थे ? कृपा कर सन्देह दूर कीजिये

राम– हां प्रिये, मैं पिता जी की दशा देख चिन्तित हूं।

सीता–हे प्रभो, आज अभिषेक के दिन पिताजी की दशा क्या है ?

राम--क्या कहूं मेरे बियोग में वे बिकल हैं

सीता- (चकित होकर) बियोग कैसा ?

राम –

सवैया ।

अभिषेक की बात सही न रही तजि राज चल्यों अब कानन मों
सुनु काहु को दोष नहीं यही मों सब काज अहै विधि-हाथन मों
जग मों जस काज जुटै जबहीं सुखहै तस काज संवारन मों
पितु मातु के आयसु ते बन जात अहौं जनि सोच करो मन मों

सीता– हे नाथ यह रंग में भंग क्योंकर हुआ ? यह क्या सुनाया ?

राम– कैकेयी माता ने पिताजी से दो बर दान लिया था उसो में मेरा बनबास वो भरत का राज्य मांगा है, वो पिता जी बाक्यबद्ध होने के कारण अस्वीकार न कर सके।

सीता – यदि यही अवश्य होनिहार है तो मुझे भी साथ लिये चलिये।

राम – नहीं, नहीं प्यारी, इसका क्या प्रयोजन है।

सवैया ।

बसिके गृह भामिनि धीर धरो सब सासु सप्रीति करो सेवकाई
लघु जेठहिं सेवत रैन दिना सुख सों दुइ लोकहिं लेहु बनाई
कबहूं यहि ठौर कभूं मिथिला जब हो जस चाह रहो तहं जाई
निज धर्म्म निबाहि तजो दुखसोंच भजोहरगौरी सदा चितलाई

सीता-

ठुमरी—खेमाच

जिअब कैसे, तोहि बिनु प्राण अधारे ॥ टेक ॥
रहन कहत मोहि अवध कवन हित, आपु तो बनहिं सिधारे।
सकल तजि, आपु तो बनहिं सिधारे ॥ जिअब कैसे ॥
नारि पुरुष सैयां एकहिं कलेवर, सोंचहु जिय निज प्यारे।
दया करि, सोंचहु हिय निज प्यारे ॥ जिअब कैसे ॥
जो बनवास पिता तोहि दीन्हो रहब न उचित हमारे।
अवध सैयां, रहब न उचित हमारे ॥ जिअब कैसे ॥
रैन चन्द्र बिनु दिवस सूर्य्य बिनु, तैसे अवध अंधियारे।
तिहारे बिना, तैसे अवध अंधियारे ॥ जिअब कैसे ॥
सुख सम्पति मोहि एकहु न भावत, डसत सरप जिमि कारे।
कठिन बिष, डसत सरप जिमि कारे ॥ जिअब कैसे ॥
सङ्ग चलब पिय सेवा करि हौं, प्रभु नित साथ तिहारे।
बनहिं बन, प्रभु नित साथ तिहारे ॥ जिअब कैसे ॥

ठुमरी—परज।

तजहु जनि, दासी दीन अभागी।
तोहि बिनु नाथ अवशि जरि जैहौं, तलफि २ बिरहागी।टेक।
मातु-पिता-ढिग घर मोहि राखत, करत सकल सुख भागी।
आपु चले बनि भेष भिखारी, भोग-बिषय-रस-त्यागी ॥
मातु पिता सखी सङ्गी सहेलिन, सबहिं तज्यो तोहि लागी।

करम बचन मन तव चरणन की, प्रेम-सुधा-रस-पागी ॥
तन मन धन अर्पण करि तो पर, पद कमलन अनुरागी ।
ताहि तजत कस नीति करत प्रभु, बनि अब निठुरबिरागी॥
बीच सभा मम पाणि गहेउ पिय, दे साखी सुर आगी ।
लेइशरण कस चहतचलन बन, तजि अब निज अर्द्धांगी ॥

राम – हे प्रिय, अत्यन्त विकल न हो, विकलता से विचार-शक्ति नष्ट हो जाती है जिससे हानि लाभ का ज्ञान नहीं रहता ।

सवैया ।

१ प्रिय भामिनि बात सुनो चितदे रहहू घर काननहै दुखभारी
बहु दानव दुष्ट फिरैं भयदायक मृगन जात न हाय निहारी
नर-शोणित पान करैं रजनीचर कामी बली छलके बपुधारी
सब पापपरायण लीन बिषै रस खोजि फिरैंनित सुन्दर नारी
२ बनमों फलमूल मिलै कबहूं कहुं कूप तड़ाग न पावनबारी
कुश कंटक कंकड़ पाद गड़ै कहुं सूझ न पन्थ महा अंधियारी
बरसात समै तरुछांह बिते कतहूं नहिं धाम की आसपियारी
तन व्याकुलहो घबड़ाय उठै सहि जात न आतप शीतबयारी
३ बन शूकर भालु भयानक नाहर बोलतहैं जनु घोर घटागी
गज युथ मतंग फिरैं उमगे कपि बृंद लंगूर कुदैं तरुडारी
अवनीतल पूरण कीट पतंग कुरंग भुजंग महा बिपधारी
बन घोर कठोर चहूंदिशिहै सहिहो कस प्राणप्रिया सुकुमारी
४ तुमतो अति कोमल भीरु सदा बनवासहिं योग्य कठोर हिया

घरबाहर लोग बियोग मरैं बसि पासहिं लेहु बचाइ जिया
सब बात बिचारि रहौ इतहीं यहिमों सब भांति भलाई त्रिया
बन चौदह सम्वत बासकरी मिलिहौं तोहि आइ बहोरि प्रिया

सीता – हा नाथ, आप ऐसे कठोर होगये, मुझ दीन पर कुछ भी दया नहीं आती ?

भजन—धुन रास लीला ।

दया करि, नाथ न अस उर आनो ।
जो सबतजि तव शरणगहेउं पिय, ताहि न तजिये भुलानो ।टेक।
स्वर्ग नर्क भय आस न अब मोहि, सुख दुख सब बिसरानो ।
जग के प्रेम-बन्ध तजि मम तन, मन तोहि हाथ बिकानो ।।दया०
कानन जीव जन्तु आदिक डर, प्रभु मोहि बादि बखानो ।
हे पिय मृग गजादि लखि छिनहूं, सिंहिनि-हृदय डरानो ।।
निशिचर डर तुम ताहि सुनावहु, जो न सुन्यो यश कानो ।
मुनि मख राखि सुबाहु ताडिका, सबहिं हतेउ एक बानो ।।
मुनि-तिय शिलारूप तजि पति ढिग, गई करत गुण गानो ।
नैनन लखेउं सहित धनु भंजेउ, सब नृप-बल अभिमानो ।।
नहिं दुख कछु बन नाथ करत नित, रूप अमिय रस पानो ।
पूरण चन्द्र प्रकाश लखत कहुं, भल चकोर मुरझानो ? ।।
जो आयसु-बश संग न जैहौं, प्राण अवशि गत जानो ।
सो गुनि संग हमहिं पति लेहू, इतनी बिनय अब मानो ।।
दया करि नाथ न अस उर आनो ।।

भजन विहाग ।

नाथ मोहि छाड़ि कहां बन जात ॥ टेक ॥
मातु पिता भ्राता प्रिय परिजन, जहं लगि नेहरु नात ।
सासु ससुर देवर गृह चाकर, कोउ नहिं मोहि सुहात ॥
राज भवन सब सम्पति पूरण, मणि भूषण बहु भांत ।
सुखम सेज बन बाग बाटिका, जेहि लखि इन्द्र लजात ॥
सो सब सुखद हर्ष जब मन मों, तन-दुख दुसह सहात ।
मन-दुख रहे कहां सुख जग मों, बादि फिरो भटकात ॥
शीतल पवन दहत तन को नित, फूलहु सेज चुभात ।
बागन बिकसत देखि कली प्रभु, बिरहिन-हिय मुरझात ॥
संसारिक सुख भोग बासना, तनिकहुं मन न लोभात ।
सांचि कहों प्रिय पति जू तुम बिनु, सुर पुर नर्क लखात ॥
शोकहरण प्रिय नाथ हमारे, जो न सुनहु मम बात ।
आयसु शिर धरि तनु रहि जैहैं, प्राण लगे सँग जात ॥
विनती करउं चरण धरि शीशहिं, अब मोहि कछु न बसात ।
आपन मोर समुझि हित आयसु, देहु जो तोहि सुहात ॥

(सीता नमित मुख उदास हो चुप होगई आंख से आंसू बह रहा है)

राम -

सवैया ।

अतिहीं असमंजस आनि पर्‌यो नहिं औषध है यहि कारण को
होइहैं जस अंक लिखे बिधना कोउ नाहिं सकै तेहि टारन को

मणि माणिक भूषण भोग तजो, औ तजो मनहारिनि सारिन को
अब नाहिं समै चलु वेगि अबै, करि भेष सबै मुनि नारिन को

जवनिका पतन ।

पंचम अंक ।

प्रथम दृश्य—कोप भवन ।

(राजा दसरथ आंख बन्द किये बिकल पड़े हैं, कैकेयी अलग बैठी है वशिष्ट, अरुन्धति, सचिवनारी, कैकेयी की सखी आदि बैठी हैं) सीता राम लछमन आते हैं वो प्रणाम करते हैं ।

दसरथ (आंख खोलकर) हा राम अब तुम्हारा बियोग सहा नही जाता

राम-पिताजी अधीर न होइये, अब बिषाद का समय नहीं है ।

सवैया ।

सबसों मिलिआयउं वेगि पिताअब जातअहौं बनमों छनमाहीं
सिय लक्ष्मण सङ्ग लगे हमरे समुझाइ थक्यो कछु बूझत नाहीं
जनि तात डरो कछु सोच नहीं तिहरे डर दानव देव डराहीं
तजिमोह बिदाकरु तीनहुं को भल आशिष दे निजनेमनिबाहीं

दसरथ- हा बिधि यह कौन दिन दिखलाया, किस घोर पाप का यह फल है ?

सवैया ।

अतिहीं सुकुमारनकाननयोग्यबिलोकिजियाअतिशयअकुलाई
धिक हा इन नैनन सो अवलोकत कानन जात सिया दोउ भाई
बिनु पुत्र रह्यो सुख सों बहु काल लों पुत्र-बियोग न मोहि सहाई

जगमों केहिलागि जियावतहौ विधि वेगिहरौ मम प्राणहिंआई

राम–हे पिता जी, आप ऐसे धर्म्मज्ञ वो धर्म्म निष्ठ राजा को स्नेहवश नहीं होना चाहिये, मैं कुशल पूर्वक बन में वास करूंगा, आप अपने प्रजा को निःशंक पालन कीजिये ।

दशरथ–(सीता प्रति) क्या तुम भी हमारे साथ नहीं रहोगी ?

छन्द ।

तुम नारि अति सुकुमारि बन हित कोल्ह भिल्लन की त्रिया
परिणाम भल नहिं होइ बन जनि जाहु, सोंचहु जिय सिया
तोहि समुझि प्रिय रघुवीर सम अवलम्ब कछु हम पाइ हों
अवलोकि तोहि सब बिरह-जनित-कलेश निज बिसराइ हौं
२ हा जात तूं बन भवन तजि मुख कौन जनक देखाइ हौं
तोहि लेन आइहिं जनकजन तेहि काह कहि समुझाइ हौं
तोहि लागि कष्ट अपार होइहिं राम-सङ्ग न लागहू
नित निकट हमरे रहहु सिय जो चहहु हम मन मांगहू

अरुन्धति (कैकेयी प्रति)

छन्द ।

सुनु रानि हिय हठ ठानि रघुवर हानि जिय जनि धारहू
कस मोह बश निज काज कर परिणाम नाहिं विचारहू
तजि सहज भाव कठोर बनि कस भूप-प्राण निकारहू
दुइ लोक केहि लगि नासहू कस बनत बात बिगारहू

सखी–

अरि जाहु सखि कस कोह करि अस कठिन काज करन चहौ
का लाभ मिलिहैं राम बन गमने कवन बिधि सुख लहौ
को मन्त्र दीन्हेंउ काह सीखेउ मर्म सब हम सन कहौ
भव कूप मों पति-भक्ति-रजु तजि हाय कस तिनुका गहौ

सचिव नारी – महारानी जी आपही सब किसी को पालन करने वाली हैं, सुख देनेवाली है, दया कीजिये, और।

छन्द।

लखु राम सोग बियोग मों पुर लोग नैनन्ह जल भरे
बिलखात व्याकुल भूलि तन-सुधि नमित मुख शिर कर धरे
मुख आव बचन न सूझ कछुक उपाय बिपद समाजुरी
अवलोकि हा अस हाल कस छाती न फाटत राउरी

कैकेयी –

सवैया।

चुप साधि रहौ किन आप सबै कस नाहक बात बढ़ावति हौ
हम जानति हौं अपनो भल क्यों बिनु पूछल बात चलावति हौ
घर जाइ सिखावहु संगि सहेलिन जो मोहि पाठ पढ़ावति हौ
पइहौं निज काज किये फल को कस नाहक मोहि सतावति हौ

कैकेयी – (राम प्रति)

छन्द।

तिहरे बिरह उनमत्त इव नरपाल व्याकुल बोलहीं

सुत-प्रेम-बश सत-धर्म्म-पथ को तजन लगि मन डोलहीं
मुनि चीर रघुबर लेहु निज कर मगन मन तन डारहू
सौमित्र सिय पहिराइ प्रमुदित अबहिं बन पगु धारहू

(कैकेयी उठ कर मुनीचीर देती है)

बशिष्ट जी – धिक् धिक्

रोला छन्द ।

रे मतिमन्द कैकेयी कुटिल कठोर अभागी ।
बन तपसिन कर चीर देसि सिय कहं केहि लागी ॥
केवल रामहिं कानन-बास दियो रघुराजू ।
लषण जानकिहिं कस पहिरावसि कानन-साजू ॥
केकय नृप कर नाम आजु तैं दीन्ह हंसाई ।
की तोहि लागेउ प्रेत कहूं की मति बौराई ॥
लखत तोर करमात लाजहूं जात लजाई ।
व्यर्थ जन्म जग तोर मरसि किन माहुर खाई ॥
निरखि तोर अति थोर लगत व्याधन निठुराई ।
अरि अनरथ कर मूल बैठु मुख कारिख लाई ॥

सखी – हाय, हाय, अब भी आप को दया नहीं आती ?

खेमटा ।

महारानी तिहारो कठिन जियरा, ए कठिन जियरा हा कठिन॥ टेक॥ जेहि ऊपर भाग सोहाग तेरा, तिनके तन सूखि भये पियरा

सगरो पुर मों हहकार मचे, कस नाहिं तेरो बिहरे हियरा ॥
लखुरी पुर आजु मसान भयो, दिनहीं सुनु बोलत हैं सियरा ॥
तम छाइ गयो घर बाहर मों, बिनु रामहिं अवधपुरी-दियरा ॥
तिहरे सुत राज करें सुख सों, रखु रामहिं भूपति के नियरा ॥

राम–

दोहा ।

मातु पिता सब के चरण, बन्दौ बारम्बार ।
सब मिलि देहु अशीष अस, जेहि बन कुशल हमार ॥

दसरथ -

दोहा ।

हाय राम रघुवंश मणि, हाय राम सुखधाम ।
तुम अस सुअन पठाइ बन, अधम जियत केहि काम ॥

(राम लखन सीता वशिष्ठादि जाते हैं)

दसरथ--(सुमन्त प्रति)

छन्द ।

अब जाहु बेगि सुमन्त रघुवर-सङ्ग बन दिखलाइ के
लौटाइ लावहु चार दिन महं भांति बहु समुझाइ के
नहिं फिरहिं जो रघुवंश मणि बहु यतन करि सिय फेरिहो
यहि आस पर निज प्राण रखि तव बाट निशि दिन हेरिहौं

सुमन्त– जो आज्ञा (सुमन्त जाते हैं)

दशरथ– (चाकरों के प्रति)

दोहा ।

है कोऊ लेचलहु मोहि, राम मातु के पाहिं ।
रहत बनत नहिं एक छण, नरक सरिस घर माहिं ॥

चाकर गण – जो आज्ञा महाराज (राजा जाते हैं)

पटाक्षेप

तृतीय दृश्य—हाट ।

(सीता राम लषण जारहेहैं वो बहुत से नर नारी गण बिषाद कररहेहैं)

तोटक छन्द (ठुमरी धुन लखनौआ)

पुरबासी –

१ बन जात लषण हा राम सिये। तजि राज प्रजा मुनि-भेष किये
नृप साज वो राजसमाज तज्यो।सुखसम्पति भोगबिलासतज्यो

पुरबासिन–

२ तनि देखु सबै इन भ्रातन को। छवि धाम मुनी-सुर-त्रातन को
नहिं छत्र चमर शिर डोलतहैं। गुण मागध सूत न बोलतहैं

पुरबासी–

३ तन छार लगे तरु छाल बसन।नहिं अङ्ग विभूषण त्रान चरन
जनु हर्ष विषाद नहीं इनमें। वैराग्य महा जस योगिन में

पुरबासिन–

४ अवधेश ससुर मिथिलेश पिता।पति राम समान सुरारि जिता
सुकुमारि सोइ सिय चन्द्र मुखी।बन माहं चली बनिदीन दुखी

पुरवासी-

५ केहि भांति प्रजा गण धीर धरैं।नहिं कोउ लखात जो पीर हरै
विरहागि लगी तनमों मन मों।परिवार प्रजा गुरु लोगन मों

पुरवासिन-

६ सखि कानन मों कहु का खइहैं।हिम आतपकाल कहां जइहैं
केहि ठाम ये बास निशा करिहैं।मग जात थके श्रम के हरि हैं

पुरवासी-

७ नहिं जानपड़े बिधिका करि हैं।सबलोगबियोगहिं में मरि हैं
केहि देखि इन्हे बिदरे न हिये।इन्ह छाड़ि कहौ फल कौनजिये

पटाक्षेप ।

तृतीय दृश्य—वशिष्ठ द्वार ।

(वशिष्ठ जी के द्वार के सामने राम, सीता, वो लक्ष्मण आते हैं)

वशिष्ठ - धन्य हो रामजी तुम्हारी बिचित्र लीला है, कहां अभी अभिषेक का उत्साह था, लोग आनन्द में फूले नहीं समाते थे कहां यह भेष वो बन गमन ? हंसते लोगों को क्षण भर में यों रोला दिया ? धन्य हो तुम, वो तुम्हारी माया और भी धन्य हैं ।

(सीता के ओर संकेत करके)

भजन नारदी ।

राघव बन्दौं तुम्हरी माया, जेहि बश जग बौराया। राघव।टेक।
अगम अपार बनै नहिं बरणत, सकल लोक भरमाया।
झूठहिं सच सच झूठ लखावत, उलटो सूझ सुझाया॥
नासत कबहुं कबहुं उपजावत, नट इव खेल खेलाया।

बिबिध भांति के जाल रच्यो है, को जेहि नाहिं बझाया ॥
आदिशक्ति ईश्वरसहबासिनि, मूलप्रकृति जग गाया ।
सत रज तम गुण तीन धारि हिय, निर्गुण ब्रह्म छिपाया ॥
ज्ञानखानि धरि रुप शारदा, बिधि सों जगत रचाया ।
पंच तत्व रचि मेलि भांति बहु, बहु ब्रह्मांड दिखाया ॥
जल थल नभ गिरि कानन कोटिन्ह, कोटिन्ह देश बसाया ।
जीव जन्तु अनगणित रंग बहु, भिन्न भिन्न उपजाया ॥
काहु को रंक करत इक छन मों, कोउ नर नाह बनाया ।
कोउ पण्डित कोउ मूढ़ करत हिया, आवत रोष न दाया ॥
रमा रुप धरि सङ्ग रमा पति, पालत सृष्टि निकाया ।
कामिनि कञ्चन मोह मूल रचि, जीव जगत लपटाया ॥
रजनीचर उतपात बढ़े जग, जब जब धर्म्म नसाया ।
पीय-सङ्ग अवतरत भूमि पर, सहि दुख हेतु पराया ॥
धर्म्म थापि असुरादि दमन करि, हरत सोंच सुरराया ।
नांसि पाप भुइ भार उतारत, पुन्यहिं करत सहाया ॥
उमा रुप शिव-सङ्ग बिराजत, पिय बहु भांति रिझाया ।
जन्म अनेकन बरेउ काम रिपु, पतिब्रतधर्म्म लखाया ॥
सोवत मोहनिशा नर को पथ, परमारथ दिखलाया ।
श्रद्धा रूप सुनत तिहरो गुण, तव पद प्रेम बढ़ाया ॥राघव॥
अति अगाध महिमा सुर नर मुनि, कोऊ अन्त न पाया ।
हेरत हारेउ बेद पुराणनि, रहे सकल मुंह बाया ॥ राघव ॥
दीन जानि जब नाथ कृपा करि, जन पर होहु सहाया ।

तब कोउ तोरि सकत भवबन्धन, अस निगमागम गाया

राम–(बशिष्ठ प्रति)

सोरठा ।

बन्दौ पद धरि माथ, लषण सीय संग जात बन ।
विनय करउं कछु नाथ, सब प्रकार तोहि जानि हित ॥

सवैया ।

गुरुदेव सुनो हमरि बिनती रघुबंश सदा तुमहीं प्रतिपाला
करिहौ सोइनाथउपायभली विधि मातु सखा जनिहोहिंबेहाला
तिहरेशिरभार प्रजागण के नित काज निवाहहु राजबिशाला
प्रभु ध्यान विशेपसदारखिहौ जेहि पाव न सोगवियोग भुआला

हे गुरु देव, भरथजी को शीघ्र बुला लीजियेगा, यद्यपि प्रेमबश वह नहीं चाहैं परन्तु आप समझा बुझा कर उन्हे अवश्य राज तिलक देकर पिताजी का बचन सत्य कीजियेगा, अब कृपा कर आशिर्वाद दीजिये ।

बशिष्ठ –

दोहा ।

लषण सीय संग बसि बिपिन, राम बर्ष दश चार ।
कुशल छेम लवटहु अवध, यह आशीष हमार ॥

(राम लक्ष्मण सीता वो सुमन्त प्रणाम कर के जाते हैं)

जवनिका पतन ।

षष्टम अंक ।

प्रथम दृश्य—तमसा तीर सूर्य्योस्त हो रहा है

(सुमन्त, राम, सीता वो लक्ष्मण तट की ओर जा रहे हैं)

सुमन्त – हे रघुनन्दन, देखिये आप के वियोग में कितने जीव दुखी हो रहे हैं, महाराज तो प्राणहीं देने को उद्यत हैं नगर के नर वो नारी घर द्वार छोड़ आप के पीछे चले आ रहे हैं मनुष्यों को कौन कहै नगर से चलते समय पशु पक्षियों को कैसी दशा थी? जहां तहा मन मारे निराश चित्रवत बैठे थे. सत्य है.

दोहा ।

महत जनन सुख होय जो, सुखी होत सब कोय ।
जो दुख पावे शोक मों, विकल सकल जग होय ॥

हे राघव औरों को जाने दीजिये अपने कुल के आदिकारण सूर्य्य महाराज को तो देखिये ।

रोला छन्द ।

सुनहु राम अब सांझ भयो लखु चारहुं ओरा ।
घट्यो दिवाकर-तेज बढ्यो कानन तम घोरा ॥
जो रबि-किरिण प्रचंड सकेउ नहिं कोउ निहारी ।
बिनु बल तेज भयो अब शीतल हाय तमारी ॥
ज्योतिहीन छबीछीन भयो दिनकर बिलखाता ।
सुनितिहरो बनगमन भयो अस मोहि लखाता ॥
भूप प्रजागण अवधपुरी बिपदा अति भारी ।

निज-कुल-भूषण तोहि देखि नहिं सकेउ दुखारी ॥
यहि कारण अस हाल भयो इनके रघुनन्दन ।
शोकातुर अब खसेउ ऊंच पद ते जगबन्दन ॥
व्याकुल बूड़त सिन्धुमध्य की भूमि धसत हैं ।
की नभ छोड़ि बनहिं गिरि खोहन जाइ छिपत हैं ॥
की अब करि अंधियार बनहिं सिय भीरु डरावत ।
"तुमनहिंकाननयोग्यफिरहुघर"सियहिंसिखावत ॥

लक्ष्मण – हे तात अपराध क्षमा कीजिये, मेरे बुद्धि में तो कुछ औरही जान पड़ता है ।

रोला छन्द ।

सुनहु नाथ अब बर्णत हौं निज भाव बिचारी ।
ज्ञानहीन हौं मूढ़ छमा करु चूक हमारी ॥
जगव्यवहार बिचित्र कबहुं नहिं मोहि सुहाता ।
कारण कौन यथारथहै नहिं मोहि बुझाता ॥
जहं देखहु सुखदेत सुखी को सब मिलि धाई ।
दुखी भये दुख देत सभी नहिं कोउ सहाई ॥
मातु पिता बिनु दोषहिं हा तोहि दीन्ह सजाई ।
राज साज सब छोड़िचले कानन तुम भाई ॥
पहिरे बल्कलचीर नहीं कहुं ठाम निवासा ।
भोजन जल कहुं नाहिं लगे जो भूख पियासा ॥
सब दुख सहत बने दिन मों जबलों उजियारा ।

निशिचर-बल नहिं चलै नहीं भय सर्प हुड़ारा ॥
सोऊ सकेउ न देखि दिवाकर गयउ छिपाई ।
लखुहु तोहि दुख देन निशा अँधियार पठाई ॥
कहहु बेगि हम जाइ ताहि फल आजु चखावों ।
क्षत्रि जात कर रोष तेज बल आजु लखावों ॥

राम – हां, हां, ऐसा कहना उचित नहीं यथार्थ तो यह है ।

रोला छन्द ।

जिनहीं है जस भाव जबै तिनहीं तस सूझत ।
जिय मों जग की सकल वस्तु कुछ और न बूझत॥

(सुमन्त प्रति)

हमरे विरह-पयोनिधि बूड़त हौ तुम ताता ।
शोकाकुल हिय तोहि सकल जग शोक लखाता॥

(लक्ष्मण प्रति)

औ तूं लक्ष्मण हौ नित प्रेम पगे पद मोरे ।
नेह नात कछु और नहीं जगमों हिय तोरे ॥
प्रेम बिबस तुम दुखित मोहि नहिं सकत बिलोकी ।
क्रोध होत तोहि वापर जो मोहि करत सशोकी॥
मोहि दुखित लखि न्याय बिना जग तोहिलखाई ।
यहि कारण अस होत भाव तिहरे मन भाई ॥

परन्तु ।

जग की है जस रीति सदा इक भाव रहत है ।
गुण अवगुण नित सानि चतुर्मुख जगत रचतहैं ॥
संसारिक व्यवहार शृंखलाबद्ध गुनो तुम ।
नियमित कारण कार्य्य निरन्तर होत लखो तुम॥
सुख दुख हर्ष शोक दिन यामिनि द्वन्द कहावत ।
एक अनन्तर एक अवशि निज रुप लखावत ॥
दुख बिनु नहिं सुख होत कबहुं दिन नहिं बिनु राता।
भूष तृषा बिनु अमृतमय भोजन नहिं भाता ॥
स्वच्छ पवन सुख अनुभव होत अहै उनहीं को ।
नगर बीच दुर्गन्ध वायु नित पान करैं जो ॥
जग-दुख केवल क्लेश-जनक निष्फल नहिं ताता।
अति आवश्यक है जग मों बहु आनन्द दाता॥
दुखही कारण है सुख के तुम जानहु नीको ।
दुखही ते मर्याद मान भेंटत सबहीं को ॥
आगि तपाये कनक-तेज नित होत नवीना ।
सहि दुख ऊंचे पद पहुंचत निर्धन अति दीना॥
जग मों सब कछु है उपदेशत नाना भांती ।
बिनु सोंचे मन थीर किये नहिं बात बुझाती ॥
नित उठि भोरहिं रबि नासत हैं जगत अंधेरा ।
गिरि कानन कहुं रहत नहीं अंधियार-बसेरा ॥
छन छन तेज बढ़त रबि पहूंचत मध्य अकाशा ।
तीक्ष्ण करन्ह पसारि चहूंदिशि करत प्रकाशा ॥

अति ऊंचे पद बैठि महा गर्वित मद माते ।
सोषत सिन्धु तपत धरनी फल फूल सुखाते ॥
जीव जन्तु अत्यन्त कष्ट बहु भांतिन पाते ।
ताकि तरु-छांहन भवनन्हि धाइ शरण सब लेते ॥
जब असह्य दुख बढ़त जगत नहिं वर्णन योगू ।
अवनति होत अरम्भ अवश्य करम-फल-भोगू ॥
क्रमशः पद ऊंचे ते छन छन गिरत पतंगू ।
क्रमशः बढ़त अंधार होत कीरति-यश-भंगू ॥
होत सांझ बल तेज प्रतापहिं सकल गँवाई ।
अपमानित तजि गगन बेगि रवि जात लुकाई ॥
विदलित तम पुनि चढत धाई हरि लेत प्रकाशा ।
संभावित कहं मरण भलो नहिं कीरति नाशा ॥
अहंकार सब पापन के तुम मूल विचारो ।
अवशि विनाशत सकल पुन्य-फल निज हिय धारो॥
उदय अस्त रवि होत भेद अति गूढ़ सिखावत ।
संसारिक ऐश्वर्य्य सबै क्षणभंगु बतावत ॥
ऊंची पदवी पाइ कर्म्म गर्वित जो करहीं ।
गिरत नीच पद अवशि कछुक बल तेज न रहहीं॥
उदाहरण बनि अस उपदेशत नित्य दिवाकर ।
पै कोउ ध्यान न देत जगत मद भूलि निरन्तर ॥
सुनहु लषण मम बात सदा हिय मों तुम धरहू ।
बल-विद्या-ऐश्वर्य्य-गर्ब कबहूं जनि करहू ॥

दुर्बलहूं बलवन्त हरावत दुर्दिन पाई ।
रोगी सर्पहिं खींचि घसीटत चीटिन्ह धाई ॥
जब लगि शंकर-कृपा सदा सुख सम्पति जानो ।
निज पुरुषारथफल किंचित सपनेहु जनि मानो॥

सुमन्त- हे रामचन्द्र आप यथार्थ कहते हैं, आप के ऐसेही शुद्ध बिचार वो सद् गुणों ने सब का मन हरण कर लिया है इसी कारण सब को आप का बियोग जनित दुख असह्य हो रहा है, अच्छा अब हम लोग तमसा नदी के तट पर आ पहुंचे, वो अन्धेरा भी अधिक होचला, आप लोग बिना अन्न इतने दूर तक चले आये, अवश्य थक गये होंगें, देखिये श्रीजानकी का सुकुमार शरीर कैसा पीला होगया, अधिक थकने के कारण अब उन को एक एक पग उठाने में कितना क्लेश हो रहा है, इस लिये उचित है कि यहीं रात्रि गँवाइये, प्रातः काल आगे बढ़ेंगे ।

राम- मैं भी तो यही कहने को बिचार रहा था, सब लोग एक तो दुखी, दूसरे मार्ग के श्रम से पीड़ित हैं और यह स्थान भी प्रशस्त वो रमणीय है, नदी का जल भी अति उत्तम है, आज की रात यहीं डेरा गिरे, ऐसा प्रबन्ध कीजिये जिसमें किसी को क्लेश न हो ।

(पुरवासीजन आते हैं)

सुमन्त- यह देखिये सब लोग पहुंचही तो गये, आते जाइये सज्जनों, आज रात्रि को यहीं रहने का बिचार है, यथारुचि स्थान देख बिराजते जाइये ।

पटाक्षेप

द्वितीय दृश्य—तमसा तट एक प्रहर रात्रि रहते समय

(सब लोग अचेत सोये हैं, राम सुमन्त को उठाते हैं)

राम- हे तात, उठिये, अब रात्रि अधिक नहीं है।

सुमन्त- मैं जगा हूं।

राम- भला विचार तो कीजिये, मेरे बुद्धि में तो इतने लोगों को साथ लेकर वन जाना उचित नहीं जान पड़ता, सभों को बड़ाही क्लेश होगा वो अयोध्या उजाड़ हो जायगा, इन लोगों के बिना पिताजी का दुख और भी असह्य हो जायगा, किसी प्रकार इन सब को घर भेजना चाहिये।

सुमन्त- हे राघव, मैं क्या करूं, सभों को समझाकर थक गया कोई नहीं सुनता, और किसे दोषदूं? आप का वियोगही ऐसा है, मैं तो अपनेही चित्त के भाव से उन सभों के भाव का अनुभव कर रहा हूं।

राम- यह ठीक है, परन्तु आपही विचारिये कि इतने लोग चौदह वर्ष वन में कैसे रहेंगे, इन सब के बिना पिताजी वो माता लोगों की क्या दशा होगी, उन लोगों का चित्त क्षन भर भी बहलाने वाला नगर भर में कोई नहीं मिलेगा, इस कारण कोई युक्ति करना चाहिये जिसमें यह सब घर लौट जायं।

सुमन्त- हे रामचन्द्र मैं क्या बताऊं स्वयं उसी रोग से ग्रसित हूं, बुद्धि विचार सब भ्रष्ट होरहा है, भला रोगी कहां तक औषधि बता सकता है।

राम - अच्छा अभी सब लोग नीन्द में अचेत होरहे हैं हम सब इन्हें यहीं छोड़ चल दें, वन में कोई मार्ग तो है नहीं, कहां तक वो किधर ये लोग हम सब को ढूढेंगे, अयोध्या का मार्ग आते समय सब ने देखाही है, जब हम लोग नहीं मिलेंगे तो हार मान कर अवश्य इन को घर लौटना पड़ेगा।

(राम लक्ष्मण को उठाते हैं)

क्यों भाई उठो कुछ तुम भीतो सोचो ।

सुमन्त - सभों को यहां छोड़ना तो अत्यन्त कठोर कर्म जान पड़ताहै.

राम - पर क्या किया जाय जैसा समय आता है करनाही पड़ता है समय के अनुसार करना सर्वदा उचित है वो इसी में सब की भलाई भीहै. यह कर्म्म इस समय कठोर जान पड़ता है परन्तु परिणाम इसका अत्यन्त सुखद वो लाभ दायक है।

लछमण - हे प्रभु आप का कहना यथार्थ है, बिलम्ब करने योग्य नहीं, अभी उठिये वो चुप चाप चल दीजिये ।

राम - अच्छा अब सीता को उठा लो वो धीरे से चल दो ।

(लछमण सीता को उठाते हैं वो चारो जाते हैं)

पटाक्षेप ।

तृतीय दृश्य—तमसा तट प्रातः काल

(सब सोये हैं)

एक पुरवासिनी (आंख मलते उठ बैठती है) अहा मैं क्या स्वप्न देख रही हूं ? मानो कोई राम, सीता को बलात् हम सभों के निकट से लिये भागा जाता है, देखो तो वे संगहीं में सोये हुए हैं परन्तु मन का सन्देह रात्रि को स्वप्न में प्रगट रुप देखाई देरहा है

एक पुरवासी-(उठकर) हे भाई राम किधर हैं ? यहीं तो सोये थे, दिशा जंगल को तो नहीं गये ?

दूसरा - यह क्या ? लछमण सीता भी नहीं हैं ।

तीसरा-अरे मंत्री जी भी नही हैं ।

(सब घबड़ा कर उठते हैं वो चारो ओर ढूंढते हैं)

अपर पुः - क्या ये लोग सच मुच चलेही गये, हाय ऐसा बिश्वास तो नहीं होता ।

अ: पुरवासिनी – भाई मैं तो नदी के किनारे २ दूर तक देख आई कहीं पता नहीं।

अ: पु: – मैं तो निकट के सब झाड़ियों में ढूंढ आया कहीं न पाया।

अपर पु: – मैं तो उस छोटी पहाड़ी के शिखर तक जाकर चारो ओर देखा पर हा वह सांवली मूर्ति कहीं देखाई नहीं दी।

अ: पुरवासिनी – इस निगोड़ी नीन्द ने सर्बनाश किया, हाय हत्यारी को तनिक भी दया नहीं आई।

अ: पु: – हाय अब मिलने की आशा नहीं।

(सब बिकल हो उनमत्त सा गाते हैं)

भैरवी।

सिय राम कहां अब पाऊंरे, जिय के कस ताप मिटाऊंरे ॥टेक॥
मन मोहनि मूरति भूलत ना, बिधिना केहि भांति भुलाऊंरे ॥
हम लोगन को तजि सोवतही, जहं राम गये कस जाऊंरे ॥
चहुं ओर फिरों भटके भटके, केहि कानन जोह लगाऊंरे ॥
अब याहि समय हित नाहिं कोऊ, बिपदा केहि रोइ सुनाऊंरे ॥
जग मों कतहीं अवलम्ब नहीं, जेहिते दिन रैन बिताऊंरे ॥
केहि देबिन को अब ध्यान धरूं, केहि देवन जाइ रिझाऊंरे ॥
अन मोल लला अब खोइ भला, घर जा मुख काह दिखाऊंरे ॥
तरु ताल नदी फल फूल कोऊ, तनि होय दयाल बताऊंरे ॥
केहि मारग सो सिय राम गये, सोइ राह धरे हम जाऊंरे ॥

ठुमरी भैरवी।

बनहिं मोहि त्यागि पधारे कहं राम ॥ टेक ॥

१ रवि कुल मणिरे, निठुर अस बनिरे, बनहिं मोहि त्यागि० ।
२ बाम बिधातारे, आजु लखातारे, सूझत नाहिं उपाय,
कवन चूक कीन्हो, जो फल अस दीन्हो, हिय न हाय लहत
तनिक विश्राम ॥ बनहिं मोहि त्यागि पधारे कहं राम ॥
३ निज दुख गावोंरे, काह सुनवोंरे, कोऊ हित न लखाय,
बिपति अति भारी, सहत बनैनारी, बतावोकोउ बेगि सियावरठाम
बनहिं मोहि त्यागि पधारे कहं राम ॥

(एक भिल्लिनी आती है)

एक भिल्लिनी – अरे तुम सब कौन हो ? किसके खोज में इतना बिकल हो ?

एक पुरबासिनी – हे बहिन हम सब के मङ्गु दो राज कुमार वो एक राज कुमारी थी; न मालूम भोरेही उठकर किधर चले गये ।

भिल्लिनी – हां हां मैं ने आज बड़े भोरे तीन पुरुष वो एक स्त्री को अयोध्या की ओर जाते देखा है (सब आकर भिल्लिनी को घेरते हैं)

अः पुः--किधर, किधर ? बताओ तो सही. क्या तुम उन्हे पहचानती हो?

भिल्लिनी – नहीं मैं पहचानती तो नहीं, परन्तु एक बृद्ध वो दो अति सुन्दर बालक वो एक सुकुमारी बालिका को मुनि-भेष में अयोध्या की ओर जाते मैं ने देखा है ।

अः पुः – जान पड़ता है कि वे लोग घर लौट गये चलो हम सब भी फिर चलें ।

(सब जाते हैं)

पटाक्षेप ।

चतुर्थ दृश्य—गंगा तट

राम - हे तात हम लोगों को श्री अवध छोड़े आज कई दिन होगये, आपने भी हम लोगों के साथ बहुत क्लेश उठाया, अब आप कृपा कर लौट जाइये, आप के बिना पिता जी वो पुरवासियों को बहुत दुख होता होगा, अब हम लोग गंगा पार हो कर बीच बन में जायगें ।

सुमन्त - हे राघव, हमारे अकेले लौटने से कुछ लाभ नहीं होगा इस कारण ।

सवैया ।

हे रघुवीर फिरो घर को नहिं तो नरनायक प्राण तजैंगे
राज प्रजा धन धाम तजी सुर लोक अवश्य पयान करैंगे
नाथ वियोग के चोट कठोर लगे उर मों कस भूप सहैंगे
देख पड़े कछु आस न जो बिरहाकुल भूपति धीर धरैंगे

राम - हे मंत्री जी, आप का कहना सत्य है. पिताजी के बिकलता को मुझे अधिक ध्यान है. इसी कारण आप को शीघ्र भेजना चाहता हूं. पिताजी के बचन को उलंघन कर उनके प्रण भंग में सहायक होना पुत्र का कर्तव्य नहीं. इस लिये,

सवैया ।

करजोरि कहौं बिनती हमरी कहिहौ तुम तात पिता समुझाई
पितु-पुन्य-प्रताप न ताप कछू बन घोर हमैं अतिशय सुखदाई
मुनिनाथ सो मोर बिनै कहिहौ कहि ज्ञानकथा हरिहैं बिकलाई
करि हौ तुम तात उपाय सोई जेहि ते पितु मातु प्रजा सुखपाई

सुमन्त - हे रामचन्द्रजी, आप का कहना यथार्थ है, परन्तु इस अवसर

में कोई ऐसा उपाय बिचारना चाहिये जिस्में दोनो काम बनै, यदि मेरी बात मानिये तो।

सवैया।

यहि ठाम निवास करौ तुम देवसरी-तट कानन जानि जिये
करि भोजन बास प्रबन्ध भलो सुख सों निकटे नगरी रहिये
प्रभु कानन बीच न जाहु कभूं कछु लाभ नहीं तन-क्लेश दिये
फिरि जाहिं घरे लघु भ्रात सिया बिनु शंक निवास इतै करिये
२ श्रम क्लेश बिना मृगया करिये जनि सोंच संकोच हिये गुनिये
लखिये बहु भांति लता तरु ताल सुगंधित फूल फुले चुनिये
श्रुति पाठसदा गुरु ते सुनिये चित शान्त किये अति ध्यान दिये
यह ठाम सुहावन पावनहै प्रिय राम इतै सुख सों रहिये
३ भलियुक्ति यही नृपकी दुख-मुक्ति बेहाल न होइहिं काहुकभी
सुखः सों घर मों दिन रैन कटे इतही नित आवत जात सभी
नित गंग नहा फल मूल चखो रुचि सो पयपान करौ सुरभी
प्रभु मोर कहा इतनो अब मानहु बात सभी बनि जात अभी

राम – सुनिये मंत्रीजी।

सवैया।

१ सुनि के अतिहीं भल जानपड़ेपुनिदेखुबिचारिहिये निजबाता
घर मों बनमों कछु भेद नहीं रहिहें यहि ठौर बसे सुनु ताता
निबहैनहिं धर्म्म कलेशबिना बिनु अंकुश काज किये मन भाता
निबहै नहिं धर्म्म कबै उनते तन पोसनमों जिनके मन राता

२ तन जाय रहे धन जाय रहे जगमों अपबाद लहौ यश हानी
छल छाड़ि लखोअपने हियमों जसकाज कहैसो करौ हितमानी
सबके हिय मों हर बास करें करतब्य बतावत हैं दिनदानी
हठ ठानि जो तूं बिपरीति चलो नहिं दूसहु ईश लहे दुख खानी
३ तुम तो अति बृद्ध पिता तुल हौ परमारथ जानत हौ भलि रीति
हिय-भावबिना,उपरी दिखलाव किये अति पातक होत अनीति
पितु आयसु पालन है हमहीं तन सो मनसो बच सो करिप्रीती
नहिं लोक रिझावन नाम करावन चाहत हौं छल सो जग जीति

सुमन्त -

सवैया ।

तुम तात जो ना फिरिहौ घर को मिथिलेशसुता कहं देहु पठाई
जल-यान सिया होइहैं दुख सागर बूड़त भूपति लोग लुगाई
"जवहीं बन पंथ कठोर भयानक जन्तु लखीसिय भीरु डराई
समुझाइ ले आवहु " भूप कह्यो सुनु नाथ अनाथन के सुखदाई

लक्ष्मण-मंत्री जी आप क्या कहते हैं, पिता जी के भाव को आप नहीं समझा ।

सवैया ।

सिय राम बियोग बिलाप करी नृप लोगन को दिखलावत हैं
अबला बश हो बनबासदियो अब लाजहिये कस आवत है ?
फिरि हैं अब नाहिं कोऊ बनते जस काज कियो पितु पावत हैं
अब जो होनिहार सोई होइहैं घर राह धरो नहिं भावत है

राम- (लक्ष्मण प्रति)

दोहा ।

अहह भ्रात तुम कहहु जनि, अस दुर्वाक्य कठोर ।
पितु समान नहिं हित मिलै, तीनहुं लोक टटोर ॥

(सुमन्त प्रति) हाथ जोड़ता हूं क्षमा कीजिये ।

दोहा ।

लषण-बचन जनि धरहु जिये, कहिहहु जनि पितु पास ।
बाल असिच्छित जानहू, नहिं हिय शील न त्रास ॥

(सीता प्रति)

सवैया ।

सुनु राज कुमारि विचारु हिये फिरहू यहि मों सब भांति भलाई
मम आयसु पालहु भूपसुता घरमों पितु मातुहिं सेवहु जाई
जब देखि पड़ैं बन मों रजनीचर केहरि भालु महा दुखदाई
तुम भीरुन की गति कौन कहै बड़ धीरन के जिय जात सुखाई

सीता- हे अर्य्यपुत्र जो आप ने कहा सब सत्य है, परन्तु तनिक बिचार तो कीजिये ।

ठुमरी-इमन ।

बतावो पिय, केहि लगि फिरि घर जाऊं ॥ टेक ॥
तीनहु लोक के सुख देनिहारे स्वामी, कहु केहि और रिझाऊं ।
जो घर रहि सुख भोग करौं हम, प्रेम के नाम मिटाऊं ॥

सब सुख मोहि बन नाथ तुमहिं संग, कालहुं नाहिं डराऊं ।
बिनु छल सेइ चरण कमलन नित, निज दुइ लोक बनाऊं ॥
बतावो पिय, केहि लगि फिरि घर जाऊं ॥

भजन- मलार

सुनहु प्रभु बन-सुख भवन न देत ॥
बन बहु बिधि नित दृश्य देखावत, बरबस मन हरिलेत ॥टेक॥
घर बसि नर रचना लखुचहुं दिशि, जड़ निर्जीव अचेत ।
ईश्वरकृत कानन सुख सागर, पूरण जीव सचेत ॥
कहुं गिरि घोर कठोर भयानक, भरे लता तरुपात ।
मनहुं प्रकृति लजि ढांकि दियोहै, कठिन नग्न तेहि गात ॥
की जीवन्ह नैनन हित साजेउ, हरित बसन कर साज ।
की सुर लोगन रुचिर सिहांसन, भूतल मध्य बिराज ॥
कहुं निर्मल शीतल झरना जल, गिरत गिरिन्ह ते फूटि ।
मज्जन पान करत जेहि मो नर, लेत सकल सुख लूटि ॥
नाला कंदर खोह भयानक, अति गम्भीर अथाह ।
जनु भुई खोलि बीकट मुख ग्रासन, दुष्ट जनन नित चाह ॥
रंग बिरंग बिहंग मनोहर, फुदकतहैं तरु डार ।
गान करत पंचम सुर साधे, सुनि सुख अकथ अपार ॥
लघु तर होत बिशाल खगन्ह लखु, गगन खिले जब जात ।
मन्द मन्द मेड़रात चहूं दिशि, आवत भूमि लखात ॥
बहु श्रम चढ़त नहीं कछु उतरत, थीर पंख फैलाय ।

वायू-बल नहिं गिरत देखु कस, आनन्द उर अधिकाय ॥
केतिक भांति जन्तु बन विचरत, चरत हरित तृण पात ।
परम स्वतन्त्र फिरत मद भूले, फूले अंग न समात ॥
सरिता तट उंझके तरु-पातिन, जल निज रुप निहार ।
छवि लखि गर्वित झूमत जस गज, उन्मत भूपति द्वार ॥
जन-समाज-अवगुण-अवसर नहिं, लखत अलौकिक रुप ।
याते मुनिगण बास करत यहि, ठौर तजत भवकूप ॥
कानन उपजावत सुखमय भय, बरणत बनत न मोहि ।
पटतर योग न राजभवन-सुख, देखहु हिय निज जोहि ॥
सबविधि सुखप्रद है यह कानन, जो दुख पूरण होत ।
तौंहू संगचकोर इव रहत्यों, लखत चन्द्र मुख जोत ॥
अस सुख छाड़ि सङ्ग तिहरो पुनि, कहु केहि लगि घर जाऊं ।
अस आयसु जनिदेहु दयानिधि, विनय करउं धरि पांउं ॥

(सीताजी राम के पद पर गिरती हैं वो रामजी उन्हे उठाते हैं)

राम– (सुमन्त प्रति)

दोहा ।

सुनहु तात अब जाहु घर, मानत है कोउ नाहिं ।
तुम बिनु होत अकाज उत, धीर धरहु मन माहिं ॥

(राम, सीता, लक्ष्मण प्रणाम कर के जाते हैं, सुमन्त शोकातुर खड़े हैं, नेत्रों से जल धार वहा जारहा है)

जवनिका पतन ।

सप्तम अंक

प्रथम दृश्य—बन मार्ग

(सुमन्त आते हैं)

सुमन्त-हा राम यह कैसा दिन दिखलाया, हम तो न इधर के रहे न उधर के; किंकर्तव्य विमूढ़ हो रहे हैं; हाय आप लोग बन में कैसे समय बिताते होंगे, इसी की सुधि आते छाती फटती है. जिनके प्रतिक्षण के सुखके निमित्त मुझे कितनी सामग्री नित्य इकट्ठी करनी पड़ती थी, हाय आज वे लोग अनपूछे अनजाने जिधर तिधर निर्जन बन में मारे फिरते होंगे, बिधाता तूं भी धन्य है, गुलाब को कांटे पर सुलाते तुझे तनिक भी दया नहीं आती, हाय, अब तो एक डेग आगे बढने को जी नहीं चाहता, हे मन लौट चलो, पर कहां ? बन में क्या राम लषण को फिर पासकेंगे ? कहां खोजेंगे ? कदापि उनके मिलने की आशा नहीं, फिर अयोध्याही क्या जाते हो ?

भजन—देस ।

कवन सुख लागि चलत पुर हाय ।
कानन बीच सिया रघुनन्दन, सब सुखमूल बिहाय ॥टेक॥
सब सुख के भण्डार राजगृह, शोभा बरणि न जाय ।
सो बिनु राम भयंकर होइहिं, देखत लोग डराय ॥
भूप बाग आनन्द बाटिका, देखत मन न अघाय ।
हा सिय राम दरस बिनु आजू, सब होइहिं मुरझाय ॥
चहुंदिशि अवध सुहावन पावन, अति रमणीय सुहाय ।
दीपक राम बिना अंधियारो, जातहिं काटिहिं धाय ॥
नित नव आनन्द होत रह्यो जिन्ह, बीथिन्ह साज सजाय ।

हा लखिहौं तहं बिलपत पुरजन, सुध बुध सब बिसराय ॥
पूछन कुशल जबहिं जननीगण, चहुं दिशि घेरिहिं आय ।
उत्तर हाय कौन दीहौं तिन्ह, का कहिहौं समुझाय ॥
सुअन-विरह बूड़त मग जोहत, भूपति पूछिहिं धाय ।
टूटत आस अवशि तजिहैं तन, छन महं अति अकुलाय ॥
अधरम धरम न बूझ पड़े कछु, सूझ न मोहि उपाय ।
अशरण शरण हरण सब संकट; शिव अब होहु सहाय ॥

(बेसुध हो भूमि पर गिरते हैं)

(एक सन्यासी आते हैं)

सन्यासी– अहा, यह कैसी मनोहर भूमि है, इस स्थान में आप से आप चित प्रभु की ओर प्रबृत होता है (घूमते हुये गाता है)

भजन विहाग ।

शम्भु तव महिमा अकथ अपार ॥
बरणत गुण गण वेद शेष अरु, शारद मानत हार ॥ टेक ॥
कनककशिपु त्रिपुरादि निशाचर, अमित पाप भंडार ।
सो सब तेरे शरण गहि तेरो, अस कहु कवन उदार ॥शम्भु॥
मथे सिन्धु जब देव असुर मिलि, मिले रत्न दश चार ।
निज निज स्वारथ लागि देवगण, लीन्हे बस्तु बिचार॥शम्भु॥
कोउ गज बाजि कोउ गउ लीन्हे, कोउ रम्भा मणिहार ।
कोउ धनु हेम रमा कोउ लीन्हे, कोउ सुरतरु सुखसार॥शम्भु॥
केवल तुंहि तकेउ नहिं स्वारथ, कीन्ह जगत उपकार ।

देखि सकल सुर जरत हलाहल,लीन्ह गलेनिज डार॥शम्भु॥
जेते असुर अधम अति कामी, जीव निरत संसार।
सन्मुख होत काटि भव-बन्धन, छन महं करत उधार॥शम्भु॥
देवन्ह प्रेरित काम गयो जब, करि माया बिस्तार।
अतुलित बीर कीन्ह जग ब्याकुल,नाशेउ धर्म्म बिचार॥शम्भु॥
जड़ चेतन सबहीं बश करि तोहि, पाहिं गयो जब मार।
अधिक उपद्रव देखि ढिठाई, जारि कियो तेहि छार ॥शम्भु॥
ब्याकुलरति रोदाति उठि धाई, सुनत दशा भर्तार।
सहि न सकेउ लखि आतुर तिय को,छन महं लीन्ह उबार॥
सत्य नाम तव आशुतोष प्रभु; बिदित सकल संसार।
चूक छमा करि द्रवहु बेगि अब, सुनतहिं दीन गोहार॥शम्भु॥

भजन सोहनी ॥

उमावर रवि ढिग कस अंधियार ? ॥

सर्व प्रकाशक तेज तेरो जहं, तहं कस तिमिर अपार ॥ टेक ॥
वेद पुराणनि सन्त मुखन ते, श्रवन कियो बहु बार।
नर-हिय-मध्य सदा तुम बिचरहु, दीन दयाल उदार ॥उमावर॥
सो हिय मों लखु काम क्रोध अरु मोह कियो अधिकार।
जेहिते हा हिय आजु भयो, अज्ञान तिमिरि भराडार।उमावर।
तुम्हरे बास करत हिय मेरो, कस न होत उजियार।
मूक भयो कछु बोलि न जाई, अस आश्चर्य्य निहार।उमावर।

(सन्यासी की दृष्टि सुमन्त की ओर पड़ती है)

सन्यासी– अरे इस कठोर निर्जन स्थान में यह कौन पड़ा है? (मुख की ओर देख कर) अहाः यह तो सुमन्त जी हैं, मन्त्री जी, मन्त्री जी, ऐं? यह तो बोलते भी नहीं [सुमन्त के शरीर पर हाथ फेरते हैं वो पुकारते हैं]मंत्रीजी ?

सुमन्त [कुछ चैतन्य हो कर] प्रणाम बाबा.

सन्यासी– जय हो, कहिये आप यहाँ किस कारण आये वो क्यों बेसुध पड़े हैं.

सुमन्त– बाबा मैं क्या कहूं, क्या श्री अवध का हाल आप को बिदित नहीं है? हा राम, हा सीता.

सन्यासी– अजी सुनिये तो सही, आप यह भूल गये हैं की समस्त राज्य का भार आप के शिर है? मंत्री को बिकलता से क्या प्रयोजन, ? शोक में मग्न हो आप अपने करतव्य पर कुछ भी ध्यान नहीं देते ?

सुमन्त-बाबा क्षमा कीजिये " रहै न आरत के चित चेतू "

सन्यासी-- पर यह भी आप जानते हैं कि, चौपाई.

धीरज धर्म्म मित्र अरु नारी। आपद् काल परेखियेचारी ॥

सुमन्त-- बाबा मेरी बुद्धि इस समय काम नहीं देती, इधर निर्जन बन में राजकुमारों की सुधि आने से छाती फटती है, उधर राजा वो रानियों के शोक का स्मर्ण होने से चित ठिकाने नहीं रहता, किधर जायं क्या करें, जान नहीं पड़ता.

सन्यासी - हे मंत्री जी, मैं श्री अवध की ओर से आरहा हूं, वहां की दुर्दशा बर्णन योग्य नहीं है, समस्त नगर शोकार्णव में डूबा हुआहै, केवल बशिष्ठ जी अकेले क्या करें, राजा दशरथ कंठगत प्राण होरहे हैं, आप की वहां पर अत्यन्त आवश्यकता है: यह समय बिषाद करने का नहीं है, आप सीधे

श्री अवध जाइये वो सब की रक्षा कीजिये, यदि केवट अधीर हो तो नौका के यात्रियों की क्या दशा होगी, बन में आप के सहायता की कोई आवश्यकता नहीं, राजकुमारों के लिये आप कुछ भी चिन्ता न कीजिये.

लावनी

जनि डरो सचिव जू हेतु सिया रघुराई ।
जिनके लखतेही कालहुं जात पराई ॥
जेते हैं सुर नर नाग असुर तनुधारी ।
चर अचर जहां लगि जीव जन्तु संसारी ॥
अनुकूल चलैं वा नित्त अवज्ञाकारी ।
धनु धरे कमल कर राम करैं रखवारी ॥
कहु कौन सुभट करिहैं इन संग लड़ाई ।
जिनके लखतेही कालहुं जात पराई ॥
जब जब असुरन ते बिकल होत संसारा ।
चहुं ओरन होत उपद्रव बिबिधि प्रकारा ॥
गो विप्र साधु जन के लखि क्लेश अपारा ।
पय सिन्धु छाड़ि अवतरत हरण महि भारा ॥
इनके लगि काहे सोंच करहु तुम भाई ।
जिनके लखतेही कालहुं जात पराई ॥
मुनि-संग किये जो काज सुन्यो नहिं काना ।
ये हते निशाचर बीर एकही बाना ॥
छूतेही पद रज मुनि-तिय- श्राप मिटाना ।

अति कठिन शम्भु-धनु तोड़ि सिया घर आना ॥
हैं बीर बड़े रणधीर ये दोनों भाई ।
जिनके लखतेही कालहुं जात पराई ॥
होइ ब्रम्हा बिरचत हैं ब्रम्हाण्ड निकाया ।
हरि ह्वै जो जग पालत पुन्यहिं करत सहाया ॥
शंकर जू बने बिनाशत हैं निज माया ।
एकै हरि हर बिधि बिलग रूप दरसाया ॥
जानै सोई जिनहीं वह देत जनाई ।
जिनके लखतेही कालहु जात पराई ॥
हैं करुणासिन्धु सदा प्रणतारतहारी ।
हरि त्रासमुनिन्ह हनिहैं दसकंध सुरारी ॥
सिय सेइहिं चरण लषण करिहैं रखवारी ।
सुख सो बसिहैं नित कानन अवधबिहारी ॥
तुम जाहु अवध धरि ध्यान राम प्रभुताई ।
जिनके लखतेही कालहुं जात पराई ॥

सुमन्त-महाराज आप धन्य हैं, अच्छे समय पर आये वो मेरे मोह को सदुपदेश से दूर किया, आप के आज्ञानुसार मैं अभी श्री अवध जाता हूं, आप के चरणों में बारम्बार नमस्कार है.

सन्यासी-जय हो, मन्त्रीजी की जय हो.

(सुमन्त एक ओर वो सन्यासी दूसरी ओर जाते हैं)

पटाक्षेप ।

द्वितीय दृश्य—कौशल्या भवन

(दसरथ शोकातुर पड़े हैं, कौशल्या पास बैठी हैं)

दसरथ–हा राम, हा राम, क्यों ऐसे निठुर हो गये, अब जीने की कुछ भी आशा नहीं और न तुम्हारे बिना जीने की अभिलाषा ही है, एक वार अपनी सुन्दर मूर्ति दिखला जाव जिस्में प्राण सुख से पयान करे, हा राम, हा राम.

[बिकलता प्रगट करते हैं वो आँखे बन्द कर लेते हैं]

कौशल्या–

ठुमरी इमन।

नाथ हिय धीरज धारिय आज।

राम लषण सिय सुरति करहु जनि, सुनहु बिनय रघुराज ॥टेक॥
देखि दुखित प्रभु बदन तिहारो, व्याकुल सकल समाज।
पुर गृह राज काज हा तोहि बिनु, सब बिधि होत अकाज॥
ऐसो शोक करत नर सोई, जेहि हिय ना कछु ज्ञान।
धर्म्म अधर्म्म भलेबिधि जानहु, तुम पति ज्ञाननिधान॥
सबकर भार अहै तिहरे कर, जो अब होहु बेहाल।
है घर कौन कृपानिधि आजू, जो करिहैं प्रतिपाल॥
जस नौका पर सागर माहीं, बैठे लोग हज़ार।
बिनु केवट कोउ सकत न खेई, बूड़त सिंधु-मझार॥
तस तुम बिनु परिवार प्रजा मोहि, कौन करै अब पार।
नाथ दया करि शोक तजो अब, रखहु सोहाग हमार॥
सानन्द बास करहिं बन रघुबर, पुन्य प्रताप तुम्हार।

में दासी विनवति कर जोरे, ताकहु नयन उघार ॥
नाथ हिय धीरज धारिये आज ॥

दसरथ-(आंखे खोलकर) हे प्रिये, अब हमारे प्राण की आशा मत रखो, अभी मुझे शर्वण मुनी की कथा स्मर्ण आई है. मुनी का आपही ऐसा है. वह कदापि निष्फल नहीं होगा. जान पड़ता है कि उसके भोगने का समय आ पहुंचा.

कौशल्या-कैसी कथा है ? आपने तो मुझ से कभी नहीं कहा.

दसरथ - अच्छा सुनो.

तोटक छन्द ।

इक बार गयों मृगया हित मैं। बन मों अति चंचल हो चित मैं॥
मृग संग लगे बहु दूर गयो। चहुं ओरहिं ते अंधियार भयो॥
मोहि कानन-मारग भूलि गयो। इतने महं हा कछु शब्द भयो॥
मोहि जानि पर्यो कोउ जन्तु अहै। नरआहट पा इत आवतहै॥
कर ले धनुही सर बेधि दियो। छनहीं महं हाहा शब्द भयो॥
अति आरत नाद सुन्यों जबहीं। मन ब्याकुल बेगि गयो उतहीं
जननी पितु हा जननी पितु हा। अस बोलत तापस दीख तहां
भयभीत गिर्यो पद मों उनके। अपराध छमा करहू जन के॥
मुनि-घातक-पाप लग्यो हमहीं।तोहि तीर लग्यो अनजानतहीं
अब हा विधना हम काह करौं।यहि पातक सों केहि भांति तरौं॥

दोहा ।

तब बोले मृदु बचन मुनि, सोंच करहु जनि तात ।
भयउ आज होनिहार जो, सुनहु एक मम बात ॥

छन्द ।

सुनु तृषित अन्ध पिता जननि मम बाट जोहत होइहैं
"मम पूत शर्वन मधुर जल कहुं लेइ आवत होइहैं"
अब बेगि जाइ पिलाइ जल मम मृत्यु तिनहिं सुनाइहौ
बहु भांति धीरज देइ तिनकहं तात तुम समुझाइहौ

दोहा ।

अति सभीत तब गयउं हम, मुनि-जननी-पितु-पास ।
बिनु बोले जल दे दियो, त्यागि प्राण की आस ॥
तब दम्पति बोले बचन, अस बिलम्ब कस तात ।
रहेउं मूक इव सुनि बचन, भय बस कम्पित गात ॥
बोलेउ दम्पति अन्ध तब, सुनहु पूत मम प्रान ।
जब लगि तुम नहिं बोलि हौ, जल न करब हम पान ॥

हा राम, हा राम (इतना कह राजा चुप हो जाते हैं वो थरथराते हैं)

कौशल्या-प्राणनाथ तब क्या हुआ.

दसरथ--प्रिय, आगे की बात स्मर्ण आते भय वो शोक से रोमांच हो आता है, मुख से बचन नहीं निकलता.

कौशल्या - मेरी उत्कंठा अधिक होगई है, कृपा कर कुछ संक्षेप में भी बर्णन कीजिये.

दसरथ - अच्छा सुनो.

दोहा ।

सुनत बचन तब अन्ध के, कीन्हेउ सकल बखान ।

जेहि विधि मृगया करत हा, नासेउ शर्वण प्रान ॥

हा राम, हा राम, (राजा फिर चुप हो जाते हैं)

कौशल्या – प्राणनाथ तब क्या हुआ.

दसरथ--इस पर मुनी ने श्राप दिया कि हम दोनो के सदृश्य तुम्हारा भी प्राणान्त पुत्र-बियोग से होगा, इतना कह दोनों प्राण त्याग दिया.

(सुमन्त आते हैं वो प्रणाम करते हैं)

दसरथ –

छन्द ।

अब कहहु बेगि सुमन्त कहं प्रिय राम लछुमन जानकी
बन गमन कीन्ह कि फिरेउ कहु मोहि आस नहिं निजप्राणकी
सहि जात नाहिं व्यथा सखा मोहि बेगि कहि समुझावहू
तन छीन बदन मलीन अति दुख दीन हा कस आवहू

सुमन्त –

सवैया ।

१ सुनु राजन जात समै बन मों तमसा तट यामिनि बास भयो
तजि लोगन सोवत हीं दुसरे दिन प्रातहिं गंग समीप गयो
तहं लक्ष्मण राम सिया सवहीं बहु बार बुझाइ प्रकार नयो
सबसों तब बात कह्यो पर हा तिन मों किनहू नहीं ध्यान दियो
२ रघुबंश बिभूषण धरि अहैं निज धर्म्म कदापि नहीं तजते
नित लक्ष्मण भायप प्रीति भरे हिय मों सिय रामहि को भजते

सिय के मन प्रीतम-सङ्ग-सुखी लखि कानन-दृश्य नहीं हटते
प्रभु तीनहुं सत्य प्रतिज्ञ अहैं सुख सों दिनरैन उन्हे कटते
३ प्रभु राम कह्यो करजोरि दोऊ "कछु सोंच न मोर पिता करिहैं
"पितु पुन्य प्रभावहिं सो बन मों अरिहूं अनुकूल सदा चरिहैं
"तिहुं लोकहिंमों कहु कौन अहै अवधेश प्रताप जो नाडरिहैं
उन के शिर भार प्रजागण के अस जानत धीर हिये धरिहैं"

सोरठा ।

सुनहु कौशलाधीश, बज्र धारि हिय फिरेउं पुर
धरहु धीर अवनीश, बेगि बीति जाइहिं अवधि

दसरथ – हा!

भजन-झंझौटी ।

कैकेयी दोउ मम नयन निकारी ॥ टेक ॥
हा प्रिय रघुबर हाय लषण सुत, हा सिय प्राण अधारी ।
चहुं दिशि चितवउं तोहि बिना भई, अवध पुरी अंधियारी ॥
मोहि बुढ़े की लाठी कैकेयी, काटेसि कठिन कुठारी ।
हा अब बूड़त शोक समुन्दर, ले कोउ बेगि उबारी ॥
बिरहानल तलफत निशिवासर, लहर उठे अति भारी ।
हे प्रिय रघुबर बेगि बचावहु, टूटत आस हमारी ॥

पुरबी ।

कैसे धरूं जियरा धीर हो लोगे ।
कतहुं ना देखों राम सिया की सुरतिया ॥

एकहु पल मोहि युग सम बीतत, कहवां गये रघुवीर होलोगे
बिसरत ना मृदु तोहरि बोलिया, कैसे धरूं जियरा धीरहोलोगे॥
राम बिना धिक जीवन दसरथ, हौं अति अधम शरीर होलोगे
बिहरत ना मेरेपाहनछतिया॥ कैसे धरूजियराधीर होलोगे ॥
नयनश्रवत तनथरथरकांपत, उठत करेजवा में पीर होलोगे
कीन्हकैकेयी ममप्राण कीघतिया,कैसेधरूं जियराधीरहोलोगे॥

सुमन्त । –

सवैया

१ दुख राजन दूरि करो मन ते कछु है दुख राम नहिं बन हीं
लडिकाई रहे मुनि संग बनें नहिं बात नयी दोउ भ्रात नहीं
करमों धनु तीर धरे रजनीचर बृन्दहिं मारि सकैं छिनहीं
सब लोग दुखीं उठि राज करौं तनिको उनकेंलगि सोंचनहीं
२ मधुरी फल मूल मिले अनघा झरनाजल निर्मल पावनहै
करिहैं नितहीं उठि राम अहेर बनै बहु जन्तु सुहावन है
सियरामहिं सेवहिं लक्ष्मण प्रेम भरे उनहीं मन भावनहै
सिय पूजति देविन देव सदा सुख सों दिनरैन बितावनहै
३ होनिहार रही सोइ आन पड़ी धरु धीर नहीं हिय हारियजू
करशीश धुनेबिपदा न टरै सहिबे सो कटै जिय धारियजू
अस मोह नहीं तोहि सोहत है मनमों कछु बात विचारियजू
कछु लाभ नहीं अति शोक कियेअब द्वारहिं बेगिपधारियजू
४ भलभूपसोई जोप्रजगण कोनिजस्वारथ त्यागिकरेसेवकाइ
निशि बासर चिंतत ताहिरहै छल छाड़ि सदातेहि लेअपनाई

गृह नेहरु भोग बिलास बिसारि मनोजहि पास न जातभुलाई
तिहरो कहं ज्ञान बिचार गयो मुनि नाहक बेद पुराणपढ़ाई

दसरथ—सब सत्यहै पर क्या करें. रामती हमारे प्राण को अपने साथ लेगये, अबतो, केवल धड़ यहांहै, हा राम हा राम.

सुमन्त ।—

सवैया ।

तुम भूपनके सिरताज अहौ बिनसै सब काज किये बिकलाई
कछु केतिक लत्त प्रजागण हैं जिनकीतिहरेकर हानि भलाई
सुत-नारिन मोह फंसैनृप जो यश खोइ सदादुइलोक नसाई
अपनो शिर भार बिचारि कहौ यम को कस उत्तर दीहहु जाई

दसरथ ।—

तोटक छन्द ।

तुंहुं बूढ़ भयो कछु नाहिं सुझे।अस नीति कहौ उलटोसमुझे॥
सुख आनन्द सों हम राजकरैं। अरु राम सिया बनमोबिचरैं॥
अस सोंचत हा हिय मोर फटै।छन मूरति नैनन सो न हटै॥
मोहि बेगि लखासियराम लषण।नतोदेहुमोहीबिष घोरिचषण॥

(कुछ ठहर कर दीर्घ स्वास खींचकर) हा!

नहिं प्राण मेरोबचिहैं छन मों । पहुचाव मोहीअबहीं बन मों॥

(अचेत होजातेहैं)

कौशल्या ।— हं हं यह क्या करते हैं प्राणनाथ ?

(कुछ सचेत होकर)

दशरथ–

तोटक छन्द ।

विनु रामहिंहा बहुकाल जियो। अबलो नहिप्राण पयान कियो।
अब बेगि दया करु रामसिया। हाराम सिया हा राम सिया ॥

(राजा शरीर त्याग करते हैं)

कौशिल्या– (बिलाप करती हैं)

राग विहाग ।

नाथ मोहि त्यागि चले सुरधाम, हा कल न पड़े इक याम॥टेक॥
कापर मोहि तजत प्रभु जग मों, का होइहिं परिणाम ।
करि अनाथ कहं जात अहौ हा, चित न लहत बिश्राम ॥
नाहिं भरत रिपुसूदन हैं घर, ना लक्ष्मण सिय राम ।
कासों हो अवलम्बन मन को, भा विधि मोपर बाम ॥
ऐसो अवसर त्यागेउ हे प्रभु, कीन्ह निठुर यह काम ।
आगि जरों किधों कूप समाऊं, सूझत ठौर न ठाम ॥
नाथ मोहि त्यागि चले सुर धाम ॥

ठुमरी जंगला ताल जत ।

हे प्राण नाथ रघुबीरा, केहि भांति धरौं उर धीरा ॥
जब बयस रही लड़िकाई, पितु तोहि संग मोहि पठाई ॥
सब नेहरु नात छोड़ाई, अपने गृह राखेउ लाई ॥
कस देइ चले अब पीरा, केहि भांति धरौं उर धीरा ॥

नित प्रेम जाल फैलाई, मेरो मन लियो चुराई ॥
तोहि लागि सबै बिसराई, पद कञ्ज रहेऊं लपटाई ॥
सो त्यागेउ हाय शरीरा, केहि भांति धरौं उर धीरा ॥
चिन्ता हिय देखि हमारे, नित होते अतिहिं दुखारे ॥
सो हा अब प्राण दुलारे, तजि मोहि कितै पग धारे ॥
प्रतिपालन के लै बीड़ा, केहि भांति धरौं उर धीरा ॥
जो बीर सुभट जग माहीं, सुनते तव नाम डराहीं ॥
अरिहू अति दूर पराहीं, सो टारि सकै कर नाहीं ॥
लखि दशा थम्हत नहिं नीरा, केहि भांति धरौं उर धीरा ॥
बिनु तोहि सुनो रघुराई, दुख सिन्धु महा दुखदाई ॥
महं बूड़त हौं असहाई, नहिं कोऊ आजु लखाई ॥
पहुंचावन को मोहि तीरा, केहि भांति धरौं उर धीरा ॥

(कौशल्या का बिलाप सुनकर लोग दौड़ते आते हैं वो सब रोते हैं)

जवनिका पतन

समाप्त.

राजनीति प्रेस पटना सिटी में छपा ।